पताका गीत

जिसकी चरण धूलि ने पाला,
जहां किया विश्राम प्रयान।
उस प्यारी कुलमाता को है,
मेरा बारम्बार प्रणाम॥

—

बन पर्वत में नदी-नीर में,
माता! जो पाया सन्देश।
तेरी पुण्य पताका लेकर,
फैला दूंगा देश-विदेश।

आजकल

ओ३म् ।

आचार्य रामदेवजी का
गुरुपुत्रों को
सन्देश

प्रिय पुत्र वीरभद्र !

सप्रेम आशीष-

तुम्हारा पत्र मिला। मुझे तो एक ही सन्देश आता है, और वह फिर से लिखे देता हूँ। गुरुकुल का उद्देश्य सत्य सनातन नित्य वैदिक धर्म का विशुद्ध सर्वभौम सार्वभौमिक रूप में प्रसार के अनुकूल रहना और ब्रह्मचर्य; प्राचीन और नवीन ज्ञान के अद्भुत मिश्रण और भारतीय संस्कृति का क्रियात्मिक प्रचार है। यह सब कुछ नहीं हो सकता जबतक कि गुरुकुल स्वाधीन न रहे, और जिस शिक्षा प्रणाली के घोर प्रतिवाद के रूप में यह खोला गया था, उसी की शरण सीधे या उल्टे रूप में न लें। ऐसा करना उसके लिए अपमान है, जिससे मेरी सम्मति में आत्म-बलिदान हजार दर्जे अच्छा है। यद्यपि मेरी सम्मति आचार्य "हूँ" से पूर्णतया मिलती है कि सरकारी विश्वविद्यालय भूखों, अकाल मिरों और बेकारों की संख्या बढ़ा करें देश की आर्थिक समस्या को अधिक

आजकल

विकट ही बना रहे हैं और रोटी के प्रश्न का हल शिक्षित
लोगों के लिए शिल्पों का सीखना ही है। तथापि मैं-
यह भी कहता हूं कि यदि ऐसे कुल-पुत्र हों जिनको-
दूसरी प्रकार का भ्रम हो और वह जब तक भारत माता
के बन्धन छूटते नहीं तब तक भी सार्वजनिक निश्चिन्तता के-
जीवन की अपेक्षा बन्धन में डालने वालों के बूट चाटकर धनी
बनना चाहते हैं, तो उनको यह चाहिए कि माता को कलंकित
न करें और उसका सिर झुकने न दें। वह स्वयं माता को-
नमस्कार करके उससे अलग हो जावें। गुरुकुल के अन्दर
प्रताप की स्पिरिट रही है, उसकी गर्दन टूट चाहे जावे किन्तु झुके
नहीं, कुलपिता ने मेरे सम्मुख बड़े 2 अधिकारियों को कहा कि
गुरुकुल किसी की शरण में आवेगा नहीं किन्तु यदि उसकी शरण कोई
श्रद्धा से लेना चाहेगा, तो देगा अविरुद्ध। यह सन्देश लिखते समय
कुलपिता की विशाल मूर्ति मेरे सम्मुख खड़ी है और पूछ रह
रही है "पुत्र! गुरुकुल तो खतरे में है, उसको मरने दो किन्तु झुकने
न दो और आर्यसमाज भी नहीं किन्तु आर्य जनता को कह दो कि मैं
उनके लिए जिया और उनके लिए मरा। मेरी उनसे यही याचना
है कि वह किसी को भी मेरी स्मृति के साथ विद्रोह न करने दें। जो गुरु-
कुल के न थे और न हैं और जिन्होंने गुरुकुल का कुछ खाया नहीं उनको
बिगाड़ने भी मत दो। गुरुकुल के पुत्रों के द्वारा यह संदेश मैं आर्य-
जनता तक पहुंचाना चाहता हूं। मेरा स्वास्थ्य बहुत खराब है किन्तु आत्मा
शान्ति और आनन्द में निश्चय ही लिए जाता है। मेरी चिन्ता न करें-
और यदि करते हैं तो अपना आचार व्यवहार ऐसा रखो कि उसके
समाचार मेरे दिल को ठेस न लगावें।

प्रेम पात्र पिता

रामदेव

अनुरोध

हम की मैत्री बनती है
भीरु का मन भय से एक
बार तो थरथर काँप जाता
है किन्तु वीर के सामने अपना
कर्तव्य-पथ होता है उसने
या तो शत्रु को मार कर उस
पर विजय प्राप्त करनी होती है
या अपना ही अस्तित्व मिटा
देना होता है। आज हम
सब कुलपुत्र अपनी माँ की
21 वीं वर्षगांठ मनाने

जा रहे हैं हमने सोचना
है कि हम एक वीर योद्धा
की तरह से अपने कर्तव्य
पथ पर ठीक उतरे हैं या
नहीं? अपने कुलमाता के
प्रति कर्तव्य को हमने कि
अपनी निष्ठा और शक्ति
निभाया है या नहीं? या हम
केवल एक भीरु सैनिक की
तरह पद पद पर पीछे ही हटते
गये हैं। अपने आप से मिल

— शहीदों की होली —

सींच चुके कितनी ही बार वीर-लोक सारा

खून से धरा को खोखला ही कर डाला है।

भीग उठा एक २ कोना भूमि-अंचल का

रक्त २ से ही अन्तरिक्ष भर डाला है ॥

शूलियों का शूल बन फूल पड़ जाता जब

खून सने फूलों की बनाता एक माला है।

दिल से लगाने इसे छाती खोल बैठा रोज़

पृथिवी का कण एक २ मतवाला है ॥

पापियों के पाप सुन दिल कांप उठते हैं

साथ २ कोप चिनगारियां छुड़ाते हैं ।

व्योम के सितारे समझाते बार २ उसे

आंख झपकाते भी अंगारे बरसाते हैं ॥

'खून की परीक्षा अब हो ली जयँ २ माता,
कहते कहते ही होलियों मे जल जाते हैं।
जिस ने बुझाई हैं चितागिन ऐसी राख से भी
भक्त लोग हृदयों में स्मृति सुलगाते हैं॥

6

मेरे जीवन के अतीत पर विस्मृति का पट डाल ।

तेरी पूजा को मन्दिर में
माँ ! ज्यों ही आता हूँ,
अपने हृदयाञ्चल को निर्मल
उज्ज्वलतर पाता हूँ ।
किन्तु निरख हूँ तनिक कालिमा,
पहले की जो लगी यहाँ माँ !
जितना हृत्पट को धोता हूँ,

हा ! दीखती उतनी वह भी गहरी तथा विशाल ।१।

स्मृतियाँ लहरों सी आती हैं
फिर फिर मुझको उकसाती हैं;
किन्तु सभी को ठुकरा कर कर मैं
मदिरा की मस्ती लाकर मैं
ज्यों ही अपने गाने लगता
निद्रा से तत्क्षण हूँ जगता;
सभी झनझना उठती तारें

और बेसुरा हो जाता है मेरा सब सुर - ताल ।२।

(अनुवाद) सत्यपाल.

आशीर्वचन

श्रद्धाञ्जलि

श्री धर्मदेवजी

जननी प्रणाम तुझे सदा, होवे सुमंगल कारिणी।
अति दिव्य-ज्ञान-सुधा पिला तू सर्वविध भ्रमहारिणी॥१॥

तेरी सुपावन गोद में पलना परम सौभाग्य है।
शुभ आर्यधर्मोद्धार कर तू दिव्य सुख की दायिनी॥२॥

जावें कहीं पर याद तेरी मातु नित आती रहे।
है गोद तेरी वह मधुर चिन्तादि कष्ट निवारिणी॥३॥

था वास्तविक वह स्वर्ग सुख जो पाया तेरी क्रोड में।
है धन्य धन्य सुधन्य जननी तू सकल हित कारिणी॥४॥

है कामना यह ही सदा तव नाम उज्ज्वल रख सकें।
तू शक्ति दे हम को अमित हे दिव्य बल सञ्चारिणी॥५॥

श्री धर्मदेव जी
सेवाश्रम
मल्लेश्वर

प्रणय!

श्री निधि!

माँ!

क्या कहती हो
मिट न सकेगी?
तेरी चिन्ता ज्वाला
मैं सत्यनिष्ठ
यह पी जाऊँगा
प्याला भरकर हाला
यदि न मिटा यह चिन्ता
ज्वाला का तेरा संसार
बहने देना तूने उसपर
मस्त हुआ सा जगत चाहेता
प्राणी प्राणी का संहार
क्षमा न करना अबकी बार!

— —

मां!

मैं जूझ पड़ा हूँ
पीठ न दूँगा
कर में लेकर असिवाला
मार काट कर
शत्रु शिविर को
पहिना कर बानों की माला
पूर्ण करूँगा
प्रण अपना पर
पहना दूँगा तुम को वरमाला
मिटी चाहतीं
निश्चय ही अब
तेरी चिन्ता ज्वाला !!

श्री निधि /

प्रकृति का सौन्दर्य

ले॰ श्री सुधाकर जी

वसन्त ऋतु के प्रातः काल के सुहावने समय में प्रकृति अपने उत्कृष्ट रूप में संसार में अवतरित होती है। प्रकृति की सारी सेज उसकी सम्पूर्ण देह ही मानो नूतन सुन्दर एवं प्रकाशित पल्लवों से बनी होती है। वस्तुतः प्रकृति सदा ही नूतन भावों को भरने वाली एवं नित्य नवीन सौन्दर्य को धारण करने वाली है। पश्चिमी सभ्यताभिमानी संस्कृत लोगो! तुम लोग प्रकृति की अवहेलना करते हो परन्तु जरा अवलोकन कर देखोगे तो मालूम पड़ेगा कि यह विश्व ब्रह्माण्ड प्रकृति-परब्रह्म की विलक्षण रचना है। यह एक महाशक्ति के रूप से सर्वत्र विद्यमान है। एक छोटे से परमाणु से लेकर चन्द्र सूर्य ग्रह भूमी पर्वत आदि सर्वत्र ही परमेश्वर की असीम दया अनन्त ज्ञान एवं अगाध महिमा की ध्वनि से उद्घोषित हो रही है।

संसार की कृत्रिम रचना जाल की चहारदिवारी में फंसे मनुष्यो! इस बात को अच्छी तरह से हृदयङ्गम कर लो। याद रखना कि जब कभी तुम्हारा चित्त निरुत्साहित हो तथा जब तुम्हें हृदय के अन्दर अशान्ति का अनुभव हो तो उत्साह और शान्ति की प्राप्ति के लिये जग माता की परम पावन शान्तिमयी गोद में बैठना। फिर देखना कि धीरे २ उस मातृ शक्ति के प्रति तुम्हारे विचार इतना बढ़ जावेगा कि तुम्हारा दिल स्वयं ही किसी अज्ञात अन्तः निहित शक्ति द्वारा अकस्मात् ही गोद में चढ़ बैठने को लालायित हो जाय। जरा देखो तो सही छोटे २ बच्चे हंसते २ शोर गुल मचाते २ प्रकृति माता की गोद में आनन्द खेलते हैं। अपने पालक आनन्द मय वे यहां पर ले आते हैं उनके पिता की आशीर्वाद

माता का प्रेम पाकर बाहर निकल कर प्रकृति के खुले हुए आंगन में विशाल जलराशि की जल छाया में भी मानो उमड़ता रहता है। प्रकृति की जलराशि में लहर लहर होकर के मानो उसमें सम्पूर्ण स्नेह को मिला देते हैं। जिस चाह से वे कुसुम कुसुम जलराशि को वश में करलेते हैं और अपने छोटे २ कोमल हाथों से उसकी देरी पर हुई २ थपकियां देकर पय प्रेम से उसे मानो सुलाया चाहते हैं। निर्मल हृदय से वे २ उसके मानो गाते करते हैं। अब प्रकृति देवी अपने इस विशाल रत्नराशि में से भिन्न भिन्न समयों में अपने प्रेम को जो भिन्न २ ‍ उपहार देती है उनमें से बसन्त ऋतु का "पुष्प फूल" भी है। बाह्य प्रकृति में यदि पूर्ण चन्द्र सागर को उल्लासित करता है तो अन्त: प्रकृति में बसन्त ऋतु के "पुष्प फूल" हृदय सागर में आनन्द की उल्लास लहरों को उद्भावित करते हैं। किसी भावुक कवि ने कहा है कि — "मैं तो सर्वत्र ही 'देव' को देख-ता हूं"। पाषाण में देव सुषु-प्ति की अवस्था में है। वनस्पतियों में वह श्वासोच्छ्वास लेता है। प्राणियों में वह गति करता है। तथा मनुष्यों में वह पूर्ण जीवन में उद्भावित होता है। बसन्त ऋतु में प्रात: काल के भ्रमण में प्रकृति सुन्दर फूल द्वारा उसी प्रकार नीति का उपदेश करती है जिस प्रकार वह शुक्ल पक्ष में शुभ्र चन्द्र प्रकाश द्वारा। ग्रीष्म ऋतु में निर्मल हृदय सुन्दर कुमारिका के समान पवित्र व स्वच्छ नदी के तथा मंगल अनवरत कलरव करने वाले झरने के द्वारा नीति उपदेश करती है। क्या

आपने कभी सोचा है कि वह भक्त
बिना विश्राम किये बिना किसी
कष्ट के मानो आनन्द में लीन हुआ
जल की धारा बहा रहा है। सच
पूछो तो भक्त की झंकार ध्वनि
सुनकर मेरे प्राण व्याकुल हो जाते हैं
तथा अन्तः के गम्भीरतम प्रदेश
से एक उच्च आलोक उद्भव हो-
जाती है। न मालूम कि किस अनादि-
काल से रात दिन का, सुख-
दुःख का, आदर सम्मान बिना ख्याल
किये साम्यभाव से सार गति से बह
रहा है। हे सभ्यताभिमान लोगो तुमको
यदि कभी मौका मिले तो यहां आके
के समीप जाकर श्रद्धा भक्ति से इसके
समीप बैठकर इसके अनिर्वचनीय
या सुस्पष्ट कर्मयोग के धार्मिक
उपदेश को सुनो। वसुन्धरा - प्रकृति
देवी अपने देव के लिये सुन्दर फूल
को उपहार भेंट करती है। पर
क्या यह इस सुन्दर फूल
को वास्तवती यदि वह इसके
उत्पादक वृक्ष के मूल को उचित
खाद से व पेय द्वारा न सींचती।
परन्तु शोक है हमारे हिन्दु समाज
की अवस्था कितनी प्रतिकूल है।
हम लोग राष्ट्र वृक्ष के फूल फल
द्विज वर्णों को तो बहुत मानते हैं
पर स्त्री बालक तथा शूद्रों की
जो इस राष्ट्र वृक्ष की जड़ हैं
कुछ परवाह नहीं करते। हे
हिन्दू समाज यदि तेरे अपने राष्ट्र
वृक्ष से सुन्दर एवं मधुर फल
फूल का निर्माण करना है तो
इन पर अधिक खटपट
न कर, अधिक मूलभूत स्त्री
बालक तथा शूद्रों पर ध्यान दे
फिर देखना स्वयं ही राष्ट्र वृक्ष
पर सुन्दर फूलों का निर्माण
होगा।

फूल सुन्दर क्यों है? वस्तुतः
फूल सच्चे अर्थों में सुन्दर हैं। बाह्य
रंगरूप ही सुन्दरता नहीं है, वास्त-
विक सुन्दरता तो पवित्रता में है

'सुन्दर' में जो आकर्षण है वह उसकी पवित्रता में है, केवल सुन्दर रंग तथा होने से आदमी सुन्दर नहीं होजाता बिना आन्तरिक पवित्रता के सच्चे अर्थों में मनुष्य सुन्दर नहीं कहा जा सकता। केवल बाह्य सुन्दरता तो एक पाषाण मूर्ति में भी हो सकती है। बाह्य सुन्दरता यदि आन्तरिक सौन्दर्य से रहित हो तो वह कुत्सित है, भयंकर है। उससे तो वह कुरूप ही अच्छी जो अन्दर से कलुषित तो नहीं है। फूल सुन्दर होता है क्योंकि वह पवित्र होता है। फूल ने तपस्या द्वारा अपने को सुन्दर बनाया है। विराग विकसित हो कर एक २ भाग से एक मनन से सूर्य की किरणों को अपने में विधाने किया है। सूर्य की किरणें, उस प्रकाश मान देव की तेजोराशि का एक अंश फूल में घुल कर उसको सुन्दर बनाता है। वस्तुतः सुन्दरता के लिये पवित्रता की आवश्यकता है। जो तपस्या से उद्भासित हो। क्या किसी ने कभी सोचा है कि फूल दूसरों को क्यों सुन्दर लगता है। सफेद फूल की सुन्दरता का कारण। उसका उस सभी संपत्ति को जो उसे अपने स्वामी सूर्य से मिली है अर्थात् सातों किरणों का त्याग कर देना है। इसी प्रकार लाल का लाल रंग को त्याग करने के कारण इत्यादि, वस्तुतः त्याग ही आदमी को दूसरे की नजर में सुन्दर शुभ्र बनाता है। इसके विपरीत लोभ से सब कुछ संग्रह कर लेने से आदमी काला कलूटा ही रह जाता है। अहा! कैसा करुण दृश्य है। जो फूल कल अपने पूर्ण सौन्दर्य को लेकर खिला हुआ था आज मुरझा गया है। झुक कर निस्तेज हो गया है।

पर प्रकृति की अद्भुत रचना को देखो
नये २ कुसुम अपने पूर्ण यौवन
में विकसित हैं। ईश्वर इतना
असावधान कोई ही है ईश्वर-
बार म्बार यौवन को इस
संसार के सिंहासन पर बिठाता है।
क्या इसका कोई अर्थ नहीं।
हां है। इसका अर्थ है कि ईश्वर
नहीं चाहता कि उसकी सृष्टि
अतीत के साथ सम्बद्ध होकर पीछे
हट जावे। अनन्त को व्यक्त करने
का कार्य रुक जावेगा। यदि
समय पर नवीन शक्तियां नये
तौर पर उस कार्य को न उठावें
और बनी हुई नींव पर नयी
इमारतें न खड़ी करें। यही कारण
है कि वृद्ध जल कणों की तरह
शरद विलीन हो जाते हैं। और
प्रातः काल के प्रकाश में विकसित
होने वाली कुसुम कलिका की भांति
नवयुवक संसार के क्रोड़ में खिल
उठते हैं।

और देखना, हे झिलमिलाने वाले
सुन्दर फूल मत समझ कि तितलियां
जो पंख फड़फड़ा कर तेरी परिक्रमा
कर रही हैं अनन्त काल तक तेरे
इसी सौन्दर्य का गीत गाती जावेंगी
नहीं; ये तो मधु के भूखों की टोली
है। तेरी नहीं बाह्य रंग रूप लोलुप
तितलियों के बहलावे में आकर
उनके जाल में फंस कर जो प्रेम के
नाम पर लालसा की आराधना
करते हैं। स्नेह के पर्दे में स्वार्थ
की पूजा किया करते हैं। जिनकी
आंखें केवल रूप ही का रस पीना
चाहती है। हृदय का दिव्य सौन्दर्य
नहीं निरखती; हे मानवीय
सुन्दर फूल देखना. अपना सर्व-
नाश न कर बैठना।
अरे ओ निर्मम देखना यह
अनर्थ न कर बैठना यह मनचले
शिकारी के बाण सुन्दर फूल
पर अत्याचार न कर बैठना
याद रखना रस बिन अपने
पास रखने से कोई चीज अपनी
नहीं हो सकती और न

आचार्य के लिये उपदेश

ले. आचार्य देवशर्मा जी.

शब्दार्थ - (राजा) राजा (ब्रह्मचर्येण तपसा) ब्रह्मचर्य के तप के द्वारा (राष्ट्रं) राष्ट्र की (वि रक्षति) ठीक ठीक रक्षा करता है। और (आचार्यः) आचार्य (ब्रह्मचर्येण) ब्रह्मचर्य से ही (ब्रह्मचारिणं) ब्रह्मचारी को (इच्छते) चाहता है।

जो राजा अजितेन्द्रिय, विलासी होता है उसके दुर्बल हाथों में राज्य की बागडोर सम्भली नहीं रह सकती। क्यों कि जिस सरकार के अधिकारी व कर्मचारी विषय लोलुप आचार-हीन और लम्पट होते हैं उसकी प्रजा अरक्षित होजाती है एवं पीड़ित और दुःखी होती हुई वह प्रजा उस सरकार को शाप देती रहती है। ऐसी सरकार शीघ्र ही च्युत होजाती है। अतः हे राजाओं! यदि तुम सचमुच राज्य करना चाहते हो, प्रजा का ठीक ठीक रक्षण करना चाहते हो, प्रजा को धनसम्पन्न ज्ञानविकसित और उन्नत बनाना चाहते हो तो तुम ब्रह्मचारी बनो और तपस्वी बनो। तुम अपने जीवन को सदा संयमी और तेजस्वी बनाओ और अपने आप को जितेन्द्रिय, कष्टसहिष्णु और ईश्वर-परायण बनाओ।

इसी तरह जो आचार्य शिष्य को शिक्षित करना चाहता है, उसे ब्रह्मचारी रहकर वेदज्ञान देना चाहता

आज कल

है उसे स्वयं ब्रह्मचारी होना चाहिये, बड़ा उन्नत ब्रह्मचारी होना चाहिये। नहीं तो उसे ब्रह्मचारियों की इच्छा भी नहीं करनी चाहिये। वास्तव में यह आचार्य का अपना ब्रह्मचर्य-मय और शान्तिप्राप्त जीवन ही होता है जिसके कारण यह इच्छा करता है कि और भी बहुत लोग ब्रह्मचारी बनें, कि जितने ब्रह्मचारी बनें उतने थोड़े हैं। सच्चा आचार्य अपने ब्रह्मचर्य के बल के द्वारा ही ब्रह्मचारियों को आकृष्ट करता है, उन पर शासन करता है, उन्हें अपने वश में रखता है, अपने से जोड़े रखता है और उन्हें ब्रह्मामृत पिलाता हुआ परिपुष्ट करता रहता है।

एवं कोई भी शासन – राज्यशासन या शिक्षाशासन, कालिज का शासन या पाठशाला का शासन ब्रह्मचर्य के बिना नहीं चल सकता।

ब्रह्मचारी की प्रार्थना

प्रो. श्री आचार्य "अभय"

अग्नये समिधमाहार्षं बृहते जातवेदसे।
स मे श्रद्धां च मेधां च जातवेदाः प्रयच्छतु॥

— अथ० १९.६४.१॥

शब्दार्थ - (बृहते) बहुत बड़े, परम (जातवेदसे) जातमात्र के जानने वाले, ज्ञानपुञ्ज (अग्नये) अग्नि के लिये मैं (समिधं) समिधा को, प्रदीपनीय वस्तु को (आहार्षम्) आहरण करता हूं, लाता हूं। (स) वह (जातवेदाः) ज्ञानपुञ्ज अग्नि (मे) मुझे (श्रद्धां च) श्रद्धा को भी और (मेधां च) मेधा को भी (प्रयच्छतु) प्रदान करे।

विनय — जब समिधा अग्नि में डाली जाती है तो वह जल उठती है, अग्निरूप होजाती है। समिधा में छिपी अग्नि उद्बुद्ध होजाती है, प्रदीप्त अवस्था में आजाती है। इसीलिये वैदिक काल के जिज्ञासु लोग समित्पाणि होकर (समिधा हाथ में लेकर) गुरु के पास आया करते थे, अपने को समिधा बनाकर उप

के लिये अर्पित कर देते थे जिससे
कि वे अपने गुरु की अग्नि से प्रदीप्त
होजावें / उसी वैदिक विधि के अनुरूप
मैं भी अपने आचार्य के चरणों में
उपस्थित हुआ हूं और उनकी अग्नि
द्वारा उन जैसा प्रदीप्त होना चाहता
हूं / मैं जानता हूं कि प्रदीप्त हो
जाना बड़ा कठिन है / प्रदीप्त होने
के पहले तो अपने को जला देना
होता है / और यह अपने को जला
देना तभी किया जासकता है जब
कि मुझ में पूर्ण श्रद्धा हो किन्तु
जलने के द्वारा मैं अवश्य प्रदीप्त
व ज्ञान मय होजाऊंगा / इसलिये
पहले तो मुझ में श्रद्धा की जरूरत
है / इसी तरह गीली होने अथवा
किसी दोष के कारण यदि समिधा
अग्नि को धारण नहीं करसकती
है तो भी वह प्रदीप्त नहीं होसकती /
इसलिये मुझ में ज्ञान के धारण
करने वाली बुद्धि, मेधा, की भी
जरूरत है / श्रद्धा और मेधा
के बिना मैं कभी ज्ञान से प्रदीप्त
नहीं हो सकता / पर इस श्रद्धा
और मेधा को मैं और कहां से
लाऊं? मैं तो इन 'जातवेदा:'
अग्नि से, अपने आचार्य देव से
ही प्रार्थना करता हूं कि वे मुझे
श्रद्धा और मेधा का प्रदान करें /
वे जातवेदा हैं, उन्हें ज्ञान से
उत्पन्न हो चुका है, वे ज्ञान की
जलती हुई अग्नि हैं / अत: वे
'जातवेदा' यदि चाहें तो मुझे
श्रद्धा और मेधा भी दे सकते हैं /

[illegible]

परन्तु अन्त में तो मैं जो प्रातः सायं भौतिक अग्नि के लिये अपनी दाक की समिधा लाता हूं; त्रिव्यूह में आत्माग्नि के लिये अपने शरीर मन आत्मा के प्रदीपनार्थ जो तीन समिधायें [ग्रहण] लाता हूं; राष्ट्रसेवक या धर्मसेवक बनकर राष्ट्राग्नि या धर्माग्नि आदि के लिये जो तदुपयोगी समिधायें-लाता हूं; ये सब ही सब समिधायें अन्त में उस 'बृहत् जातवेदाः' के ~~लिये~~

लिये, उस सब बुद्ध जानने वाले महान् अग्नि के लिये लाता हूं जो कि सब आत्माओं का आत्मा है, सब अग्नियों का अग्नि है, परम परम अग्नि है और अब अन्त में उसी 'बृहत् जातवेदः' से श्रद्धा और मेधा की याचना करता हूं जो कि परम कल्याणद है और मेधा का भण्डार है।

कवि

ले. दयानन्द खवाड़िया

कवि ने देखा सूर्य डूब रहा है। पश्चिमीय आकाश आंखों को चौंधियाने वाली अपनी वैभव निधि बखेर रहा है जैसे रूठा बालक अपने प्रिय खिलौने को। कवि ने तूलिका उठाई और गंगा तट पर जा बैठा।

धूल से सनी हुई मुन्नी उसकी गोद में जा बैठी और विस्मय भरी आंखें ऊपर उठा अरुण-राग-रंजित सांध्य अम्बर की ओर अंगुलियों से इशारा कर पूछने लगी - 'दद्दा' यह क्या है?

कवि ने भोलेपन से कहा - "चंदा मामा की मां का गुलाबी आंचल"।

भोली बालिका ने विश्वास कर लिया।

× × × ×

पास से गुज़रते हुए गोप ने भी ऊपर मुंह उठा जिज्ञासा पूर्ण स्वर में पूछा "यह क्या है?"

कवि ने सौम्य भाव से कहा - "देवताओं की आरती

लौट रही है। यह देव लोक की धूली है।"
चोर ने कौतुकवश पूछा - "कवि! यह क्या है?"
कवि ने आश्वासनयुक्त स्वर में कहा "सूर्य दिनभर के श्रम से थक कर चूर होगया है। यह उसी का चूर्ण बिखरा है। अब संसार अन्धकार में विलीन होजायगा।

अग्निहोत्री ने भी यही प्रश्न किया। कवि ने शान्तस्वर में कहा "देवयज्ञ ने अग्निहोम किया है। ये उसी की अग्नि शिखाये हैं।

भिक्षुक ने बड़ी उत्सुकता से पूछा "यह क्या"
कवि ने उत्तर दिया "स्वर्ण"
भिक्षुक ने विश्वासपूर्णस्वर में कहा "अवश्य"

भक्त - कवि! यह क्या है?
कवि ने दार्शनिकभाव से कहा "उसकी विभूति"
सबने कहा कवि तू अन्तर्यामी है।

गुरुकुल की अद्भुतता

गुरुकुल तो [illegible] अत्यन्त विरोधी दीखने वाली वस्तुओं का समन्वय है। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली में पूरी स्वाधीनता और पूरी पराधीनता यथोचित रूप में मिली हुई है। गुरुकुल गुरु का घर परिवार होता है गुरुकुल में ब्रह्मचारी घर के बच्चों पुत्रों की तरह रहते हैं अतः घर में पुत्रों को जो स्वाधीनता होती है वह सब गुरुकुल के ब्रह्मचारियों को प्राप्त होती है, उन्हें बाल सुलभ सब नाज नखरे करने का अधिकार होता है। इस ढंग से उनके बड़े से बड़े अपराध गुरुकुल में क्षन्तव्य होते हैं। वे घरेलू मामले चाहे कितनी क्यों गुरु को वे सब सहनी होती हैं।

इस प्रकार गुरुकुल में पूरा स्वाधीनता का वायु मंडल होता है बड़े ब्रह्मचारियों को विचार और क्रिया की भी वैसी ही स्वाधीनता दी जाती है बड़े ब्रह्मचारियों को बड़े पुण्य के कार्य करने की अपनी स्वाधीनता को भी यथेच्छ उपयोग में लाने दिया जाता है गुरु केवल इन दो बातों में आजी-

(शेष पृष्ठ संख्या ३४ पर)
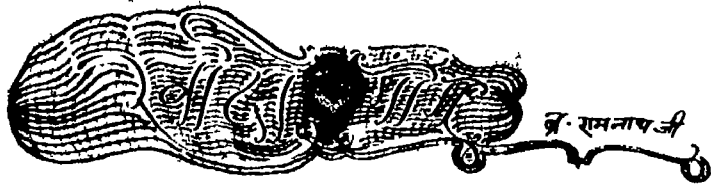
बहुत दिनों की बात नहीं, आज से दो चार साल ही पहले, अभी जब कि महात्मा गांधी ने इस सत्याग्रह आन्दोलन को प्रारम्भ नहीं किया था; खद्दर पहनने वाला लोगों के लिये अजब, विचित्र और असामान्य व्यक्ति समझा जाता था। गाँव के लोगों की बात तो छोड़ दीजिये, उनके मैले, मोटे ये खद्दर के ही तो न हों, कपड़ों को देखकर तो हर कोई यही अनुमान करता था कि यह बेचारा गरीब किसान निर्धन होने से शहरी कपड़ों को मोल न ले सकने के कारण स्वयं ही कातबुनकर जो ही तैसे अपना निर्वाह करता है। उसके खद्दर के कपड़ों को देखकर कोई भी उसमें किसी विचित्रता या असामान्यता का अनुभव न करता था। किन्तु उजले खद्दर के कपड़े पहने हुए व्यक्ति को देखकर तो उपर्युक्त आशय का ही अनुमान किया जाता था। आज भी ऐसा ही समझा जाता है, किन्तु कुछ अर्थों में;

आज यदि एक खद्दरधारी

औरों को अपनी ओर आकृष्ट करता है तो इसलिए कि वह कौंसिल में काम करनेवाला है या एक देश सेवक है। किन्तु आज से छब्बीस साल पहले यदि खद्दर-वेष की ओर लोग टकटकी लगाकर देखते थे, उसे अपने जैसा आदमी नहीं, अपितु कुछ विशेष समझते थे, तो इसलिये कि वह गांधी बाबा का अनुयायी है, वह गान्धी का कहना करता है; छोटे शहरों या कस्बों में तो जहाँ कि स्वदेशी की लहर बिल्कुल न पहुंची थी; खद्दर पहननेवाला "गान्धी" के ही नाम से पुकारा जाता था।

तब और अब में वास्तव में क्या अन्तर है? कुछ नहीं। खद्दर की स्वरूप की दृष्टि से इसमें कुछ भेद नहीं है। उस समय यदि खद्दर पहनने से देश सेवा होती थी, देश का धन बाहिर न जाकर देश में ही रहता था तो आज भी ऐसा होता है। आज भी खद्दरधारी इन्हीं अर्थों में देश का उपकार करता है। अर्थात् इस दृष्टि से दोनों में कुछ भेद नहीं, फिर भी दोनों समय के खद्दर पहनने वालों की मनो-भावनाओं में भी बड़ा अन्तर नहीं है, यह कहना शायद उतना ठीक न हो। स्थूल दृष्टि से हम दोनों में कुछ भेद नहीं पाते किन्तु यह तो निस्सन्देह स्वीकार -

करनाही होगा कि उस समय भी, कोई वेष में शुद्ध खद्दर को भी प्रयोग करता था तो इसी भावना से कि देश को इससे लाभ पहुँच रहा है। किन्तु आज भी क्या प्रत्येक खद्दरधारी के अन्दर हम इसी भावना को पायेंगे? नहीं हम किसी नियम को कायम नहीं लगा सकते। बहुत लोग ऐसे मिलेंगे जिनके अन्दर देश सेवा की सच्ची लगन है, वे खद्दर का उपयोग इसीलिये करते हैं। किन्तु ऐसे लोग भी कम नहीं जो खद्दर पहनते हैं, लेकिन किसलिये - किस भावना से प्रेरित होकर, इसका कुछ उत्तर नहीं दे सकते। वे खद्दर का प्रयोग इसीलिये करने लग गये हैं कि देश की प्रगति इसी ओर है, व खद्दर इसलिये पहनते हैं कि पहनना चाहिये, लेकिन पहनना क्यों चाहिये इसका उन्हें ज्ञान नहीं है।

विषय को छोड़कर हम किस प्रकार वैज्ञानिक विषय में लग गये? किसी भी ख्याल से कोई खद्दर पहनता हो, वह देश का और अपना उपकार करता है इसमें सन्देह नहीं। खद्दर पहनना क्यों चाहिये - इसके ज्ञान की अधिक आवश्यकता भी नहीं है, इतने में मुझे भी पर्याप्त है।

खद्दर की ओर देश की प्रगति

आत्मकथा

को देखकर कोई रंज भी करने
लग गये हैं कि खद्दर पहनना भी
आजकल एक शान में शामिल
हो गया है। इसके खिलाफ होने में
भी किसी को कोई आपत्ति नहीं
और न ही होनी चाहिए। यदि
खद्दर पहनने को शान में गिना
जा सके तो इस शान का प्रचलित
होना स्वयमेव बहुत उपयोगी
सिद्ध होगा। और हम तो यही चाहेंगे
कि यह शान केवल रंगीन लोगों
तक ही सम्भावित न रहकर प्रत्येक
भारतीय की हो जाय। प्रत्येक
भारतीय इसी शान से सुसज्जित
होकर विदेशों को दिखलादे कि
भारत भी अपनी शान रखता है।

पहनना! उस समय और इस समय
में बहुत अन्तर आ गया है। दो
साल पहले एक रेलगाड़ी के डिब्बे
में नज़र दौड़ाने से चारों ओर
विदेशी ही विदेशी दीख पड़ता
था; खद्दर की तो मुश्किल से
ही कोई मिलता था। और उसी
समय की बात है कि खद्दरधारी
इतना साहस और पर ले भी समझा
जाता था कि एक यात्री उस
प्रकार कह सकता था कि - "मुझे
दुःख है कि आपने खद्दर पहिना
हुआ है और फिर भी आप खिड़की
के आगे खड़े होकर यात्रियों
को गाड़ी में चढ़ने से रोक रहे
हैं"। उस समय खद्दर पहनने
वाले से यही आशा की जाती थी-

दरबार में कदर होती थी। और उन्होंने फ्लावी शार्लमेंगन और उसके दरबारियों को आश्चर्यचकित कर दिया था। एक अंग्रेज़ कवि लिखता है कि वे लोग अपनी आँखें फाड़ २ कर बड़े आश्चर्य से, रेशमी और कारचोबी के वस्त्रों तथा रत्नों को देखते थे, जो कि पूरब के दूर देश से यूरोप के नवीन बाज़ारों में आये थे।"

क्या एक विदेशी के मुख से अपने इस गौरव को सुन कर हमारा मस्तक अभिमान से ऊँचा नहीं उठ जाता? क्या हम अपने इन पुरखाओं के गौरव को याद करके ही खुश होते रहेंगे? हमारा कर्तव्य तो यह है कि एक बार फिर वैसा ही बन कर दिखा दें, अपने उस प्राचीन गौरव को पुनर्जीवित कर दें।

महात्मा गांधी न जाने कब से चर्खे की रट लगा रहे हैं लेकिन हम उस ओर ध्यान ही नहीं देते। हमें विश्वास ही नहीं होता कि चर्खे से, जिससे कि घंटों में छटांक भर सूत तय्यार होता है, भी कोई व्यवसाय चल सकता है। इसी तर्क का आश्रय लेकर बड़े २ लोग भी चर्खे को खिलौना

उत्तजमोल

बार बार हार देते हैं। लेकिन- क्या उन्होंने कभी इस ओर भी ध्यान दिया है कि महात्मा गांधी जिसके पीछे सारा देश चल रहा है, जिसके नाम से ही ब्रिटिश सरकार कांपती है और जिसकी अंगुल पर संसार चकरा रहा है, वह वर्षों से इस चर्खे के खिलौने से खेल रहा है। क्या वह पागल है! नहीं, वह तो दूरदर्शी है, वह इसके द्वारा किए होने वाले हुए के परिणाम को सोच रहा है।

कपड़े के व्यापार की हमारी प्राचीन उन्नति, जिसका कि अभी हमने संकेत किया है, क्या चर्खों के आधार पर थी? उस- का आधार भी यही चर्खा- यही छोटा सा खिलौना - था। यहाँ की स्त्रियों का खाली समय इसी उपयोगी कार्य में व्यय होता था। उस समय कितनी स्त्रियाँ इस काम को करती थीं और वे कितना सूत तय्यार कर लेती थीं इसकी गणना बताने पर सुनने वाले शायद आश्चर्य करें। लीजिये, इसे भी देख लीजिये —

" उस समय इस देश की वस्तुयें दुनियाँ के सब भागों में भेजी जाती थीं; और वह सब देशों की वस्तुओं से अधिक पसन्द की जाती थीं। अकेले बंगाल प्रान्त से १५ करोड़

का महीन कपड़ा, हर साल विदेशों को भेजा जाता था। पटना में 330426 स्त्रियाँ, शाहाबाद में 158500 और गोरखपुर में 175600 स्त्रियाँ चरखों पर सूत कातकर 35 लाख रुपये कमाती थीं। इसी प्रकार दीनाजपुर की स्त्रियाँ 5 लाख और पूर्णिया जिले की स्त्रियाँ 10 लाख रुपये का सूत कातने का काम करती थीं।"

उपर्युक्त उद्धरण "त्रिवेणी संगम पृ. 60" से लिया गया है। इससे अच्छी प्रकार स्पष्ट है कि उस समय चर्खे के द्वारा देश को कितनी आय होती थी। किन्तु आज तो चर्खा लगभग दूर ही गया है। खाली समय इस उपयोगी काम में न लगा कर, इधर उधर के व्यर्थ के कामधन्धों में ही नष्ट कर दिया जाता है। चर्खे से सूत बहुत कम काता जाता है, इसी से वह मंहगा है। परिणामतः जुलाहे लोग इस सूत को न खरीद कर मिल के सूत को खरीदते हैं और उसी से खड्डी के द्वारा कपड़ा तय्यार करते हैं, जो कि "अधुआ खद्दर" कहलाता है। इस खद्दर को प्राय कर बहुत लोग काम लाते हैं, क्योंकि वह उन्हें बहुत सस्ता पड़ता है। स्वार्थीजन लोग तो आय। इसी को अवसर में लाते हैं।

आजकल

यदि चर्खे का सर्वव्यापक प्रचार हो तो शुद्ध खद्दर हमें बहुत ही थोड़ी कीमत पर मिल सकता है। इसके सस्ता होने पर स्वतः एक खद्दर की मांग होगी, और दिनोदिन उसका प्रचार बढ़ता ही जायेगा, यदि खाली समय को ही कातने के काम में लगा दिया जावे तो कितना बड़ा कार्य सिद्ध हो सकता है? खाली समय का सुन्दर उपयोग और साथ ही इतना बड़ा लाभ - इस कार्य को कौन पसन्द न करेगा?

प्राचीन समय में कातना, सीना-पिरोना तो स्त्रियों का मुख्य काम ही समझा जाता था। शेख सादी ने आज से ६०० वर्ष पहले अपनी पुत्री को उपदेश देते हुये कहा था

"ऐ दो को सोज़न गुज़ाश्तन न पसन्द कार है - पर्दा पोशीए - बदन अस्त"

अर्थात् चर्खा कातना और सीना-पिरोना न छोड़ना। इसे छोड़ बैठना अच्छी बात नहीं है, क्योंकि यह पर्दापोशी का - शरीर ढकने का - साधन है।"

इसी उपदेश को महात्मा गांधी बरसों से कह रहे हैं। कइयों ने उसे सुना है। आज तक जिन्होंने नहीं सुना है, वे भी एक दिन सुनेंगे, और एक दिन आयेगा जब कि इस चर्खे से ही हम अपने प्राचीन गौरव को फिर सामने देख सकेंगे।

आत्मबल

(पृष्ठ संख्या २४ से आगे)—
सब उदारता करता रहता है, और उनके सहने में ही इस धारा की उन्नति और गुरुकुल का भला होता है। यह ही ठीक प्रकार की स्वाधीनता है जो कि विद्यार्थी के विकास के लिए आवश्यक है परन्तु गुरुकुल के ब्रह्मचारी की यह सब स्वाधीनता इसी लिये है क्योंकि वह अपने आप को इसी तरह गुरु के हवाले कर चुका होता है, गुरु को समर्पण कर चुका होता है।

इस्लाम में इस आत्म समर्पण को 'बैत' कहते शब्द से वर्णित किया है।

गुरुकुल को आत्म समर्पण करना यह गुरुकुल की एक महान् विशेषता है। वेदारम्भ के समय में जब वह अपने घर को छोड़ गुरु के कुल का बन जाता है तभी वह इसी तरह से पराधीन भी हो जाता है, गुरु के सर्वथा अधीन हो जाता है। उसे गुरु की आज्ञा के बाहर जाने की जरा भी स्वाधीनता नहीं होती उसे सदा गुरु की आज्ञा को गुरु की वाणी से अधिक

(शेष पृष्ठ संख्या ४९ पर देखें)

सामयिक परिवर्तन की प्रक्रिया

ले॰ बालकृष्णजी.

संसार की प्रत्येक वस्तु में समय समय पर परिवर्तन आते रहते हैं। कोई वस्तु सर्वदा एक रूप में नहीं रहती। आज हम जिस वस्तु को किसी रूप में देखते हैं, कुछ दिनों बाद वह इतनी बदल जाती है कि उस को पहचानना भी कठिन हो जाता है। यह परिवर्तन का नियम केवल भौतिक जगत् में ही कार्य नहीं कर रहा, परन्तु समाजों और व्यक्तियों के जीवन पर भी यही नियम लागू होता है। प्राचीन पुरुषों के जो विचार थे आज वे विचार नहीं रहे, प्राचीन पुरुषों के जो आदर्श थे वे आदर्श भी नहीं रहे। नवीन और प्राचीन पुरुषों के जीवन में बहुत अन्तर आ गया है।

इन परिवर्तनो के बहुत से कारण है। राजनैतिक और भौतिक परिस्थितियो के भेद के साथ २ आदर्श और विचारो के भेद का भी इन ~~परिस्थितियो~~ परिवर्तनो मे अधिक स्थान है।

जातियो के जीवन मे आदर्श भेद कैसे होता है इस का वर्णन प्रो अलेग्जण्डर ने बहुत उत्तम ढग से किया है। वे कहते है कि विकास-वादी भौतिक विकास के क्षेत्र मे Natural selection के नियमो को लगाते है और उस के अनुसार विकास की प्रक्रिया की व्याख्या करते है। उसी नियम को आदर्शो के विकास के क्षेत्र मे लगा कर आदर्शो के विकास की व्याख्या की जा सकती है। प्राणी जगत् मे तो सग्राम विशेष २ जातियो मे होता है और उस संग्राम मे उस जाति की विजय होती है जो परिस्थितियो के अधिक अनुकूल होती है। परन्तु आदर्शो के क्षेत्रो मे सग्राम आदर्शो मे होता है। इस संग्राम के क्षेत्र प्राणी नही होते परन्तु मनुष्य का मनक्षेत्र

आत्म कथन

इसी भाव को स्पष्ट करते हुये आगे लिखते हैं :—

किसी विशेष समयमे कोई विशेष प्रतिभा वाला व्यक्ति अपने समाज की कमजोरियों को अनुभव करता है और समाज में कुछ लोगों के सामने अपने विचारों को कहना प्रारम्भ करता है। पहले पहल लोग उस के विचारों को अपनाने के लिये तैय्यार नहीं होते क्यों कि वे विचार उस समय के लोगों के लिये सर्वथा नवीन और क्रान्तिकारी मालूम होते हैं। वे विचार (Ethos of the people) उस समय के माने हुवे विचारों के विरुद्ध होते हैं। इस लिये आम जनता उस के नवीन विचारों का भरसक विरोध करती है। अगर वह (नवीन विचारों को समाज के सामने उपस्थित करने वाला) व्यक्ति सुधारक होता है, लोगों के विरोध की उपेक्षा कर के सब के सामने खुले तौर पर अपने विचारों

आजकल

को रखता है, तो उसे अपने उन लोक विरुद्ध विचारों के कारण बहुत कष्ट झेलने पड़ते हैं। यदि वह लोगों से दी जा रही यातनाओं को भी सहर्ष झेल कर और निर्भीक होकर अपने विचारों को जनता के सामने उपस्थित करता है, तो उस समय कुछ व्यक्ति ऐसे निकल आते हैं जो उसके विचारों से सहमत होते हैं। दृढ़ निश्चय और विश्वास से दुःसाध्य से दुःसाध्य कार्य भी सहल

हो जाते हैं। ये नवीन अनुयायी भी पहले पहल समाज के कोपभाजन बने रहते हैं। परन्तु धीरे २ उन विचारों का समाज में विस्तार होना प्रारम्भ होता है। वह संस्था नवीन विचारों की उपयोगिता को अनुभव करने लगती है। इस अवस्था में इन विचारों के प्रति जो पहले घृणा का भाव था वह हट जाता है और सत्कार का भाव बढ़ता जाता है। इस प्रकार जब वह संस्था उन

विचारो को अपना लेती है तब वे विचार जातीय आदर्शो के अंग बन जाते हैं। इस अवस्था के बाद जातीय जीवन मे एक महान आश्चर्यजनक परिवर्तन आता है जिस से समाज का समाज पलट जाता है। नवीन आदर्शो के अनुसार जाति की संस्था बननी प्रारम्भ हो जाती है। प्राचीन संस्थाओ मे ढील आनी प्रारम्भ हो जाती है और इस प्रकार समय समय मे परिवर्तन का चक्र चलता रहता है।

ऊपर के ~~परिवर्तन~~ से परिवर्तन की प्रक्रिया जितनी सरल मालूम होती है वह वस्तुत इतनी सरल नही है। जातियो का जीवन बिलकुल पेचीदा होता है। उस की गति विधि को जानना विरले ही अनुभवी व्यक्तियो का कार्य होता है। इस के सिवाय उपर्युक्त प्रक्रिया के वर्णन

से ऐसा प्रतीत होता है कि यह परिवर्तन बहुत जल्दी हो जाते हैं, वस्तुतः यह ऐसी बात नहीं। साधारण से साधारण परिवर्तन के लिये कई शताब्दियों की आवश्यकता पड़ती है। समाज में जो बात गढ़ गई हो उस को निकालना और उस के स्थान पर किसी नवीन विचार का प्रचार करना सुगम कार्य नहीं है। इसी परिवर्तन के लिये कई बार बड़ी २ क्रान्तियां होती हैं। जो प्राचीन विचारों के आधार पर खड़ी हुई संस्थाओं को नष्ट भ्रष्ट कर के नवीन विचारों के आधार पर नवीन संस्थाओं का निर्माण करवाती हैं।

यही मनुष्य समाज का आज तक का इतिहास है। नवीन विचारों के प्रादुर्भाव से फ्रांस की राज्यक्रान्ति और रूस की राज्यक्रान्ति में-

जिन के द्वारा शक्तिशाली राजाओ की गद्दियां उलट गई- इसमें यही प्रक्रिया काम करती हुई दिखाई देती है। आज भारत में भी राष्ट्रीयता के नवीन विचार जागृत हो रहे हैं। इस समय गवर्नमैन्ट अपने फौलादी पंजो से उन्हें कुचलने का प्रयत्न कर रही है। परन्तु आखिर कब तक ऐसा हो सकेगा? एक दिन आने वाला है, जब भारत में अपने सब अन्तर्विरो-धो को भूल कर शक्ति का संचय कर के वही काम कर दिखावेगा, जो आज से एक दो शताब्दी पूर्व इटली और रूस में हुवा है। और इस के बाद अपने राष्ट्रीय हित की दृष्टि से नवीन संस्थाओ का निर्माण कर के उन्नति के मार्ग में अग्रसर होगा।

आज कल

(पृष्ठ संख्या ६२ का शेष)

और अप्रिय से अप्रिय आज्ञा का आनन्द पूर्वक मानना चाहिये। इसी से ब्रह्मचारी का हित और कल्याण हो सकता है। मेरी समझ में ये दोनों ही यह स्वाधीनता और यह पराधीनता दोनों ही किसी विद्यार्थी के विकसित और उन्नत होने के लिये शिक्षा के सच्चे अर्थ में शिक्षित होने के लिये अत्यावश्यक है। विद्यार्थी को कहाँ तक स्वाधीन होना चाहिये ~~कहाँ तक~~ और कितना पराधीन होना चाहिये इसका जितना सुन्दर समन्वय गुरुकुल शिक्षा प्रणाली में किया गया है उतना संसार की किसी अन्य शिक्षा पद्धति में नहीं है। इसलिये मुझे गुरुकुल शिक्षा प्रणाली सर्वश्रेष्ठ लगती है, इसीलिये मुझे गुरुकुल प्रिय है।
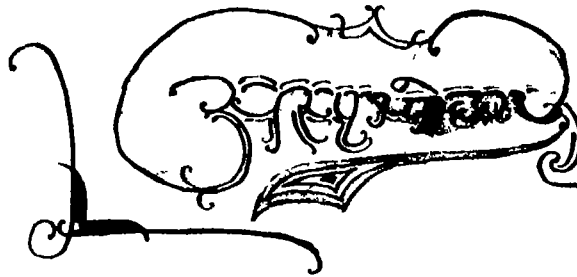
<u>प्रारम्भिक कथन</u>:— आज यदि हम संसार पर एक नज़र डाल कर देखना चाहें कि क्या कोई देश हमारे इस घृणित कार्य (अछूतों से घृणा रूप) में हमें सहयोग देने को तैय्यार है तो हमें लज्जा से सिर झुका लेना पड़ता है। सहयोग के बदले संसार हमसे असहयोग करने को तैय्यार है। इस समय पृथ्वी के किसी भी कोने में, जा ढूंढ कर भी यह बात नहीं पा सकते कि किसी भी देश ने अपनी इतनी बड़ी संख्या को दूध में से मक्खी की तरह निकाल कर अलग फैंक दिया हो; उस पर नज़र डालना भी घृणा का कार्य समझा जाता हो; पर यही चीज़ आज भारत में हमें स्थान २ पर मिलती है। अछूत शब्द भारत में ही अपने आपको सार्थक सिद्ध कर रहा है।

मानवीय सभ्यता के इतिहास में से बहुत से मौके ऐसे हैं जब कि एक मनुष्य को दूसरे का लांछन समझा जाता था उससे पशुवत् व्यवहार होता था, इसीप्रकार

भाग क

ऐसे भी अवसर आते हैं जब कि एक जाति को दूसरे की अपेक्षा निकृष्ट और पतित समझा जाता रहा गया है और उससे किसी प्रकार भी सम्बन्ध रखना एक अपना अपमान, जनक बात समझी गई है पर ऐसे २ मानवीयता के कलंक रूप अवसर कभी स्थिर नहीं रहे। ये दुनियाँ में आए और विद्युत की चमक जैसे प्रकट हो विलीन हो गये।

'अछूतों की दुर्दशा का दिग्दर्शन:-

पर अपने दौर्भाग्य से वही अवसर आज हम भारत में देख रहे हैं। मध्यकाल के इस रूप का न जाने कब समाप्ति-काल आयगा। आज भी भारत-वसुंधरा के बहुत: स्थल पर अछूतों से कितना निन्दनीय व्यवहार किया जाता है। उनको कुओं पर चढ़ने का अधिकार नहीं; मंदिर की सीढ़ियों पर वे पैर नहीं रख सकते; पाठशालाओं में सबके साथ नहीं बैठ सकते हैं। इसका क्या कारण है? उत्तर एक ही है - वे अछूत हैं! कई स्थानों पर तो ऐसा होता है कि अध्यापक ऊपर के मंजिल में बैठता है और अछूत विद्यार्थी नीचे जमीन पर वहीं से वह चिल्ला २ कर उन्हें पढ़ाता है। न जाने अछूत शब्द में क्या बिजली भरी है कि उसे सुनते ही एक हिन्दू चौंक कर अलग खड़ा हो जाता है। दक्षिण भारत में पारिआ (Pariah) लोगों को जिन्हें कि अछूत समझा जाता है, दूर से चिल्लाना पड़ता है कि

हर जाओ उन्हें छू जाना मत। ओह कितनी गिरी हुई अवस्था है। क्या वे आदमी नहीं? क्या उनमें अनुभव करने वाला हृदय नहीं? क्या उनमें मनुष्यों के गुण दया-प्रेम इत्यादि नहीं? इस तरह उनको दूर रखना कहाँ तक उचित है इस बात को पुनः मनुष्य यदि शान्त चित्त हो बुद्धि पूर्वक सोचें तो उसे इसके औचित्य अनौचित्य का पता लग सकता है। इन अछूतों का इसके सिवाय क्या अपराध है कि वे उन जातियों में पैदा हो गये जिनको कि अछूत समझा जाता है। पर महात्मा क्या उनकी शक्ति से बाहिर ही है, क्या वे अपनी उत्पत्ति में स्वतन्त्र हैं। यदि एक आदमी का जन्म ब्राह्मण के घर में हो जाता है तो क्या वह अपने जन्म मात्र से पूज्य हो गया? आज दुनियाँ प्रश्नों को कुछ प्रश्न नहीं देती। उसकी दृष्टि में ब्राह्मण और भंगी न बराबर हैं, जो भी उसके संघर्ष में आ उससे टक्कर ले सकेगा वही उसके लिये ऊँचा और माननीय व्यक्ति है। हम इस तरह के हजारों उदाहरण दे सकते हैं कि किस तरह से एक साधारण और अछूत कहे जाने वाले व्यक्ति ने उन्नति कर दुनियाँ में उच्च स्थान पाया। दुनियाँ ने उसे मस्तक पर फूल की तरह चढ़ाया वह देश का गौरव स्थान बना।

भारत इस बात को न समझता हुआ अब भी लकीर का फकीर बना हुआ है। किसी से कहो कि यह यह

अछूत-प्रथा किस काम की है, इससे हानि के सिवाय लाभ कुछ नहीं तो यह कहकर देते हैं कि बाप-दादों से चली आ रही है इस को तोड़ कर क्या करेंगे। पर वे आदमी भोलाही समझते कि यही एक ऐसी चीज़ है जिसने कि भारत को इतना नीचे गिरा रखा है। भारत पर यह कलंक का दाग इतना गहरा लगा हुआ है कि अन्य देशों के साथ यह एक पंक्ति में नहीं बैठ सकता। उनको अपना सहयोगी नहीं कह सकता। भारत की अपनी यह एक खास वस्तु है जो कि उसे अन्य देशों से बिल्कुल पृथक् कर रही है और उसे एक तरह से अछूत बना रही है। हम अपने भाइयों को अछूत समझते हैं तो अन्य देश हमें अछूत समझते हैं हमसे घृणा करते हैं।

महात्मा जी Young India (1921) में लिखते हैं कि जिस पाठशाला में मैं पढ़ने जाया करता था उसमें अछूत भी पढ़ा करते थे। पढ़ कर जब मैं घर लौट कर आता था तब मेरी माता मुझे कहती थी कि जा तू मुसलमान को छू आ क्योंकि तूने पाठशाला में भंगी चमार आदि के लड़कों को छुआ उन्हें छूने का यही एक प्रायश्चित्त है। हमारे अन्दर अछूतों के लिये कितनी निकृष्ट भावना है। हम उन्हें मुसलमानों से भी नीच समझते हैं एक तरह पर मुसलमान किसी तो

सकता है पर चमार भंगी नहीं। यद्यपि वह अपना भाई ही है - किन्तु है और उनका घड़ा उस भिश्ती की मशक से अच्छा है जो कि कभी भी साफ नहीं की जाती है और सब स्थानों पर बिना किसी विचार के रख दी जाती है। पर तो भी वह मशक तो कुएं पर रखी जा सकती है पर उनका घड़ा नहीं। बिचारे इन अछूतों को बहुतेरे स्थानों पर जोहड़ों से पानी पीना पड़ता है। उसी में उनके पशु आदि घुसते हैं और वहीं स्नान भी करते हैं। बहुत जगह पर यह भी देखा गया है कि एक ही रस्सी के दोनों सिरों पर [illegible] डोल बांध लिये गये हैं। एक से अछूत पानी भरते हैं और एक से अन्य ब्राह्मण आदि।

<u>उनकी आधुनिक अवस्था का कारण</u>

इस तरह से हम देख सकते हैं कि उन्हें हरतरह से अलग २ रखने की चेष्टा की गई है। और उनके गिराने की चेष्टा की गई है। उनको अधिकार नहीं कि वे शास्त्रों को पढ़ सकें और अपने आराध्य देव के मन्दिर में दर्शन कर सकें। इन सब बातों का कारण मध्य युग के ब्राह्मण पण्डित ही थे वे चाहते थे कि हमारा हरतरह से सम्मान हो और हम सुख से रह सकें उन्होंने ऐसी २ व्यवस्थायें कर दी कि जिनसे विद्या का सम्बन्ध जाति के बहुत थोड़े हिस्से से रह गया और ज्यादा हिस्सा अनपढ़ रहने लगा।

इस देश के हिस्से में अछूत कहलाये जाने वाले भाई भी आगये। इनका किसी प्रकार का भी विद्या पर अधिकार न रहा। इनमें दिन प्रतिदिन अज्ञानता बढ़ने लगी। समाज से अलग ही रखने के कारण उसमें होने वाले सुधार भी इनमें न हो सके और ये एक पतित-समाज के अंग बन गये। न इन्हें सफ़ाई का ध्यान रहा है और न पवित्रता का। हर तरह से ये असभ्य बनाये गये। शक्ति होते हुए भी इन्होंने उच्च कहलाने वाले समाज के सारे अत्याचारों को सहा और उनकी हर तरह से सहायता की। इनकी सेवा का बदला समाज ने इन्हें कुछ न दिया। ये बिलकुल निर्धन हो गये।

इसी अवस्था ने बढ़ते २ भयानक रूप धारण कर लिया। इस समय यदि हम उनके घरों में जावें तो हमारे रोंगटे खड़े हो जाते हैं और दरिद्रता का नंगा चित्र हमारी आँखों के सामने नाचने लगता है। जो दरिद्रता रह २ कर उधर देखी है उसका कारण तुम्हीं हो। एक झोंपड़े में कई आदमी घुस कर बैठा बैठा कर अपनी सर्दी को दूर करते हैं। न तन पर कपड़ा पहिनने को है न कुछ ओढ़ने को है। सारी रात इसी तरह आग के पास बैठे २ गुजर जाती है। एक तो इस दरिद्रता के कारण अछूत अछूत भाई मरे जा रहे हैं उस पर फिर समाज के अत्याचार ने इन्हें और भी पीड़ित कर दिया।

आमन्त्रित

इस अवस्था का यहीं अन्त न हुआ यह छूआ छूत का भूत इन में आपस में भी फैल गया। चमार भंगी को अछूत अछूत समझने लगे और उनसे अलग २ रहने लगे। इस तरह न जाने हिन्दु-समाज में कितने विभाग बन गये। छूआछूत बेहद बढ़ गई। यदि किसी व्यक्ति पर किसी अछूत की परछाई भी पड़ जाती थी तो वह अपने आप को अपवित्र समझता था। यद्यपि यह अवस्था अब नहीं है तो भी कुछ समय पहिले मद्रास प्रान्त में इस का अस्तित्व था।

<u>इसका परिणाम</u> :- इस प्रकार के मानवीयता के विरुद्ध सिद्धान्तों का परिणाम एक ही हुआ करता है- वह है क्रान्ति अर्थात् इनके विरुद्ध बग़ावत। जब हिन्दुओं ने अछूत भाइयों से मनुष्यता के अधिकार छीन लिये, उन्हें अपने पशुओं से भी निकृष्ट समझने लगे तो इनमें स्वयं भी अपने आप ऊँचा उठने की भावना उत्पन्न हुई है। आखिर कहाँ तक एक मनुष्य अत्याचार सह सकता है। एक न एक दिन अवश्य ही वह इन अत्याचारों से दिक आकर बड़े २ भीषण कार्य को भी करने को तैय्यार हो जाता है। यही बात हम अछूत-समाज के प्रति भी कह सकते हैं। उच्च कहलाने वाली समाज के पाशविक कृत्यों से अछूत आतुर हो उठे और अपने आप उन्हों ने इसका प्रतिवाद किया उसी का

परिणाम है कि आज वे इस तरह से अपने मनुष्यता के अधिकार को समझते हुए भारतीय नवशासन विधान में अपना हक माँगते हैं। इसी अत्याचार के परिणाम स्वरूप भिन्न २ नेता उठ खड़े हुए जिनकी सहायता से वे स्वयं अपने शुभ अशुभ को सोचने लगे। यद्यपि उनकी अवस्था पूर्ण रूप से सुधरी नहीं है पर तो भी पहिले से बहुत अंशों में सुधर गई है।

<u>सुधार (समाज की दृष्टि से)</u>:-

हमें इस समय इस तरह से उनकी सहायता करनी चाहिये। उनका सुधार करना चाहिये। यदि हम इस कार्य को अपने हाथों में नहीं लेंगे तो समय स्वयमेव इसे स्वयं हमसे करावेगा जैसा कि अंत में [illegible] हैं स्वयं समय आने पर जाति के लिए कुछ पार्टियाँ खड़ी हो गई और उनका अंत कर दिया। उस समय बड़ा जबरदस्त शक्ति है वह हमेशा ऐसे २ अत्याचारों के अन्त की सामग्री को उपस्थित करता रहता है। इस समय इस छुआछूत का रहना कैसे भी असिद्ध मालूम पड़ता है क्योंकि रेल, नल आदि ऐसी चीजें निकल आई हैं जो कि इस प्रथा को दूर करने में बहुत बड़ा हिस्सा ले रही हैं। रेल में सब आदमी इकट्ठे बैठते हैं। किसी ही कोई क्यों न हो भी ठसाठस भरे डिब्बे में वह भंगी से छुआ ही जाता है। इसी की वजह Municipality के नल से सब ही आदमी पानी भरते हैं

भाषण

इन बातों को ध्यान में रखते हुए वास्तव में हम बहुत अंशों में इस प्रथा को कहने ही मात्र के लिये मानते हैं। मौका पड़ने पर छुआछूत का कुछ भी ध्यान नहीं रखते। प्राय: कर घोसी (दूध दुहने वाले ग्वाले) लोग मुसलमान होते हैं, उनका दुहा हुआ दूध ब्राह्मण भी पी लेते हैं। इस अवस्था में उनकी छुआछूत किस प्रकार से रह सकती है, हाँ कहने मात्र को भले ही रह जावे।

<u>राजनैतिक दृष्टि से</u> :- यद्यपि इस समय यह छुआछूत कहने मात्र को ही रह गई है तो भी यह हमारी स्वतंत्रता में एक बहुत बड़ी अड़चन सिद्ध हो रही है। क्योंकि अब अछूत अपने अधिकार को समझते हुए हिन्दुओं से ठुकराये जाने पर अपने को हिन्दुओं से भिन्न समझने लगे और अपने अधिकार भी हिन्दुओं से अलग रह कर माँगने लगे। इसी के परिणाम में महात्मा जी ने मृत्यु पर्यन्त अनशन करने का व्रत लिया था। ऐसी अवस्था हमारे लिये यह राजनैतिक दृष्टि से बड़ी महत्व की बात है कि हम इस छुआछूत को दूर करें। महात्मा जी ने तो इस विषय को अपना मुख्य लक्ष्य बना लिया है और अपना सारा जीवन इसी को समर्पित कर दिया है। काँग्रेस के कार्यक्रम का भी यह एक मुख्य अंश बन गया है कि किस प्रकार प्रथा को दूर किया जावे। इस मत का कारण स्पष्ट ही है कि हिन्दु

आगमोक्त

इस बात को अनुभव कर रहे हैं कि हम अपने इतने बड़े भाग को अपने से अलग रख कर सफलता प्राप्त नहीं कर सकते क्योंकि यदि हम ऐसा करेंगे तो वे स्वयं ही हमारे विरुद्ध उठ खड़े होंगे।

<u>सुधार के अन्य उपाय</u> ।- इन्हीं सब बातों को ध्यान में रखते हुए महात्मा जी ने गुरुवयूर के मंदिर में अछूतों के प्रवेश के लिये प्राणान्त अनशन व्रत प्रारम्भ किया था। उस मन्दिर के लिये अनशन व्रत करने का अभिप्राय यह कदापि नहीं हो सकता कि महात्मा जी उसी मंदिर को ही अछूतों के लिये खुलवाना चाहते हों अपितु उनका अभिप्राय यही था कि किसी तरह से अनेक मन्दिर उनके लिये खुल जायें क्योंकि यह मन्दिर बहुत ही उच्च मंदिरों में से एक है। हजारों आदमी नित्य दर्शन करते हैं अतः इसके खुल जाने पर अन्यों के खुलने में उतनी बाधाओं का सामना न करना पड़ेगा।

इस समय देश में जगह २ उनके लिये मन्दिर खोले जा रहे हैं क्योंकि अब बहुत से हिन्दु समझने लगे हैं कि वास्तव में ही यह प्रथा हमारी जाति के लिये कलंक है, जहाँ तक हो सके इसे जल्दी दूर करना चाहिये। इसी कारण है कि आज Assembly में Temple Entry Bill उपस्थित हुआ है। हमें चाहिये कि हम इसे साग्रह से पास करवाने की कोशिश

करें और सरकार बाधित करे कि वह इसमें किसी प्रकार से भी बाधा न डाले। इसके साथ ही साथ हम सरकार को बाधित करें कि वह ऐसे२ नियम बनावे कि जिससे अछूतों के लिये Public places खुल जावें, वे उनका पूरा २ उपयोग उठा सकें। सरकारी कुओं पर चढ़ सकें। इस तरह इस कार्य में सरकार भी बहुत कुछ सहायता कर सकती सकती है।

अतएव सरकार भी बहुत अंशों में हमारे इस कार्य में बाधक नहीं है। एक समय लाला लाजपतराय जी ने Assembly में अछूतों के सुधार के लिये १ करोड़ (या १ लाख) रुपये का प्रस्ताव रक्खा था पर सरकार ने यह कह टाल दिया कि हमारे पास इतना रुपया नहीं है। अन्याय का बदला भरने वाली और हितकारिणी सरकार से पूछे कि हा अंग्रेज अधिकारियों के लिये जो कि इतनी मोटी २ तनख्वाह पाते हैं, रुपया कहाँ से आता है। इन बड़ी २ सरकारी Buildings के लिये रुपया कहाँ से बरस पड़ा है। हम पर इतने बड़े २ Taxes लगाये जाते हैं उनका क्या लाभ जब जब कि हमारे लिये उनका उपयोग नहीं किया जाता है। सच पूछो तो सरकार चाहती ही नहीं कि किसी भी प्रकार यह प्रथा टूट जाये वह चाहती है कि किसी तरह यह हिन्दु समाज का एक बड़ा भाग अन्धकार में ही पड़ा रहे।

इसीतरह हम इस उदाहरण से यह समझ सकते हैं कि Municipality आदि भी इस तरफ कितनी उपेक्षा से देखती है। जालन्धर के चमारों की बस्ती के पास ही एक गढ़ा है उसमें बरसात के दिनों में पानी इकट्ठा हो जाता है और वहीं सड़ता रहता है। इस कारण Health Officer ने उसे बन्द करवाने के लिये कहा और उसे सारे शहर के कूड़े से बन्द किया गया क्या उसे अच्छी मिट्टी से बन्द नहीं किया जा सकता था। यदि वहाँ अन्य आदमी रहते होते तो वे अवश्य इसके विरुद्ध कुछ कहते पर बेअनपढ़ और दीन चमार कुछ न कह सके। उनको पशु समझ उनके यहीं पर ही कूड़ा डाला गया। क्या उन में वही अनुभव शक्तियाँ नहीं जो अन्य मनुष्यों में हैं। यदि हैं तो फिर क्यों उनसे इस तरह का व्यवहार किया जाता है।

उनके सुधार का अन्य एक उपाय यह भी हो सकता है कि हम उनसे जाकर मिलें, उनमें रहें मेल करने से ही उनकी सामाजिक स्थिति का ज्ञान हो सकता है। उनको किसी प्रकार हम यह समझा दें कि हम तुमसे घृणा नहीं करते, इसका एक ही ढंग है और वह यह कि हम एक कोई ऐसा दिन निश्चित किया करें जब कि उनके मोहल्ले में जाकर साफ करें अथवा उनके घरों को धो के साफ करावें। उनको साफ रहने की

शिक्षा है। समाज से बिल्कुल बहिष्कृत कर दिये जाने के कारण और साथ दरिद्रता का प्रकोप होने के कारण उनसे सफ़ाई बहुत दूर रहती है। ऐसा मालूम पड़ता है कि वे सफ़ाई किसे कहते हैं यह जानते ही नहीं। यद्यपि वे इस अवस्था में स्वच्छ रह सकते हैं पर शिक्षा के अभाव के कारण वे ऐसा करने में असमर्थ हैं अतः हमें चाहिये कि उनको सफ़ाई की शिक्षा दें।

महात्मा गांधी जी ने अपने अछूत दिवस के कार्य क्रम में यही बात लिखी थी कि उस दिन हम स्वयं उनकी गलियों को सड़कों को साफ़ करें। इस प्रकार से करने का सिर्फ़ यही अभिप्राय है कि हम मनुष्यों के सामने यह आदर्श रखना चाहते हैं कि ये कार्य स्वयं कोई ख़राब नहीं हैं। आख़िर को माता भी यही काम करती है, डॉक्टर भी इसी प्रकार का काम करता है, Medical Student भी मुर्दे का Dissection करते हुए यही कार्य कर रहे होते हैं जिनके कि कारण हम भंगी व चमार को अछूत समझते हैं। असल में ये भी मनुष्य समाज के मुख्य और अत्यन्त मुख्य कार्य हैं। इनका होना भी अत्यन्त आवश्यक है अतः इन कार्यों को करने वाला समाज का अंग किसी प्रकार भी अछूत नहीं हो सकता। यह बात केवल कहने २ से समझ नहीं आ सकती जब तक कि हम इसको Practically करके न दिखावें।

उपसंहार

ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वह उन्हें सद्बुद्धि दे और उन्हें उनके अज्ञान को नष्ट करे जिससे कि वे इस महत्व पूर्ण कार्य के विरोध के स्थान पर इसकी सहयोगि करें।

आक्षेपों
का
उत्तर

श्री प्रो: लालचन्द्रजी M.A.

हम ब्रह्मचारी तथा धर्म-चारी नहीं हैं जो हमें होना चाहिये। इसीलिये लोग नाना प्रकार के आक्षेप करते हैं। एक कहता है कि गुरुकुल में से गांधी जैसे कितने पैदा हुए हैं। हम कुछ जवाब नहीं दे सकते। दूसरा कहता है कि गुरुकुल से गांधी कितने पैदा हुए हैं। हम कुछ जवाब नहीं दे सकते। तीसरा कहता है कि गुरुकुल से रवीन्द्रनाथ ठाकुर कितने पैदा हुए हैं। हम कुछ जवाब नहीं दे सकते। चौथा कहता है कि गुरुकुल से कोई कितने निकले। हम कुछ जवाब नहीं दे सकते। प्यारो! मुझ से एक गुरुकुल के भक्त ने प्रार्थना की कि लोगों के ऐसे ऐसे आक्षे-

को का मुंह तोड़ उत्तर दूं। यदि मैं यहां का ब्रह्मचारी होता। यदि मुझे गुरुकुल में शिक्षा पाने का सौभाग्य प्राप्त होता और शिक्षा प्राप्त करते हुए मुझ से कोई ऐसे प्रश्न करता तो जरूर मैं कम से कम एक प्रश्न का जवाब तो दे के बताता या गामा ही बनता या गांधी ही बनता।

या बनता कोई इकबाल ॥

मैं यह नहीं कहता कि ब्रह्मचारियों ने इन प्रश्नों का जवाब बिल्कुल नहीं दिया, दिया तो है पर बहुत थोड़ों ने दिया है और मुंह तोड़ जवाब तो बहुत कम मिले हैं। शहीद अब्दुल्ला के शेर पुत्रो। अपने स्वरूप को पहचानो। जैसे वह मंजे वैसे तुम मंज सकते हो। जैसे वह चमका तुम भी चमक सकते हो। टटोलो अपने अन्दर कि तुम्हारी रुचि किधर है, उधर बढ़ो उधर कमाल करो, और लोगों के उन सवालों का मुंह तोड़ जवाब दो और अपने कुल की लाज बचाओ। वह बड़ा

अभागा है और अमृत के
सागर में 14 साल है
घर फांसा और व्याकुल
बाहर चला जाता है
अगर कोई ऐसा जो नतो
बहुत विद्वान न बहुत
बलवान न बहुत बड़ा
धनि न बहुत बड़ा वंश
न बहुत बड़ा लेखक
बन सकता तो कम से
कम सच्चा, और सदा-
चारी तो कमाल का
बन सकता। यह रास्ता
तो उसके लिये सदा
खुला ही है।

एक राजा ने आज्ञा दी
कि दो चित्रकार बु-
लाए जावें और दो
दीवारो पर चित्र बना-
ए जाएं। एक, इसके
लिये एक चित्रकार
तो प्रसिद्ध मिल गया,
दूसरा एक ऐसा
आ गया जिसने क-
भी चित्र बनाए ही
न थे। राजा ने यह
कह दिया था कि
जो बढ़िया चित्र
बनाएगा उसको इ-
नाम दिया जायगा

होशियार चित्रकार ने सो-
चा कि यह अनाड़ी कहीं
उसकी नकल न कर-
ले उसने अपनी दीवा-
र के आगे पर्दा डाल
लिया। लो अब -
दोनों अपने अपने का
म में। होशियार चित्र-
कार ने तो बहुत कमा-
ल के चित्र बनाए। फू-
ल फल लताएं पक्षी
पत्ते कुंज इत्यादि
सब अच्छी तरह दीवार
पर बना दिये। उधर
अनाड़ी केवल दीवार
को रगड़कर घि

जब चित्र बन गये तो
राजा मंत्री को साथ
लेकर चित्र देखने -
आया। जब राजा ने
प्रवीण चित्रकार का
चित्र देखा तो चकित
हो गया। कौन कह
इनाम इसको मिलना -
चाहिये। और मंत्री ने
कहा कि दूसरे चित्रकार
का चित्र पहले देख तो
लीजिये फिर फैसला -
कीजिये। अब पर्दे हटा
दिये क्योंकि अब तक
ल भी कोई सम्भावना
ही न थी। पर्दे

होते ही जब राजा और
मन्त्री ने सामने की
दीवार पर नज़र डाली
तो वही का वही चित्र
अधिक सुन्दर रूप में
दीवार के अन्दर दी-
खा। अनाड़ी ने तो
केवल दीवार को रगड़-
ड़ा ही था मगर इतना
रगड़ा था कि वह
शीशे की तरह साफ
होगई थी और दरा-
चित्रकार चित्र बहुत

उत्तमता से उसके
अन्दर प्रतिबिम्बित
हो गया। क्योंकि
असल ज्यादा सुन्दर
था असली से। इस
लिये अनाड़ी को इना-
म मिल गया। मतल-
ब यह है कि किसी
को निपुण होने की
आवश्यकता नहीं
जो चित्र में या बेल में
धन में कमाल कर-
सकते हैं वह तो धन्य
हैं। वह तो अपना
अपने कुल का नाम

आजकल

सेवान करोगे ही मगर जो उन बातों में कमाल नहीं कर सकते उनके लिये एक मार्ग कमाल का सदा खुला ही है और वह है मांज मांज कर अपने आप को साफ करना। माजनिमर्ण द्वारा अपने आप का सर्वथा शुद्ध कर देना, पूरा सच्चा बनना, पूरा ब्रह्मचारी बनना, मुक्तिजी बनना। प्यारो! तुम्हें यह अवसर नहीं मिले जो तुम्हें मिले हैं।

प्रकृति माता की गोद में पल रहे हो। इस माता में अनन्त शक्ति है इस शक्ति को धारण करो जिस बात में कमाल कर सकते हो कमाल करके दिखलाओ, हम लोगों के आक्षेपों का क्या मुंह तोड़ जवाब दे। तुम सार्व कम से कम एक एक प्रश्न का मुंह तोड़ जवाब बन जाओगे। लोग तुम को देखें तो कहें धन्य है वह माता है जिसने ऐसे लाल पैदा किये। बोलो गुरु महाराज की जय!

कुलपुत्रो! गंगा की रेती में कितने घर बनाये?

ले॰ श्रीपाल

"छः-छः पैसा, छः-छः पैसा" करती हुई गाड़ी ज्यों ही हरिद्वार के स्टेशन पर आई, एक साफे-धारी लम्बे चौड़े जवान ने हमारे डिब्बे के दरवाज़े से झांककर आगे झुके झुके ही पं. विष्णुमित्र जी से पूछा कि "महराज, जिला बुलन्दशहर के ते तुसयों आन्दे हन? ए ब्रह्मचारी आपणे ई हैं न। पीलियां तौलियां वाले।" गुरु जी ने (पं. विष्णुमित्र जी को हम लोग गुरुजी कहा करते थे) मुस्कराते हुवे अपने लम्बे २ ~~बालों वाले~~ साधु बाबा से बालों में (जो कि धूनी से उठते धूवें के गुब्बार के समान बल खावे हुवे थे) उंगली फेरते हुवे कहा— "आहो! जी।" बस चल्ला ओ पण्डा देवीचन्दा

'ए समान चक्क के बाद कैम्प ने लै चल' का अपना टेलीफून दे गला। वह चन्द स्वयंसेवकों भी बटन के दबते ही बिजली की गति के समान आया; और उस हमारे सारे समान को एक जगह बांधकर आहिस्ते से कन्धे पर उठाकर ऐसे ले चला जैसे हनूमान गन्धमादन को। दूसरे दर्जे के फाटक के बाहर निकलते ही हमें अनगिनित बिल्ले धारी आदमियों ने अजी की मधुर सलामी दी"। हमारी आराम सामग्री का देखते-न-देखते ढेर लग दिया। मैं तो फूला न समाता था क्यों? तीसरी श्रेणी में जब हम एक बार दिल्ली यात्रा गये थे तो हमारे एक अनजान अधिकारी-पण्डित अनजाने में चांदनी चौक की एक दुकान के सामने अपने सहज स्वभाव के कारण व प्रकृति शक्ति

आजकल

पर हम भी जानते थे कि आर्य-
समाज के मतानुसार सब चीजें
ससीम हैं, एक परमेश्वर ही असीम
है। इसी लिये कभी-कभी जाकर
लोगों समझने की भी सीमा आयेगी ही।
सीमा आयेगी तो जरूर पर ये कौन
जानता है कि आज या कल में
आयेगी? या लाखों करोड़ों साल ही
जाकर सके? तो? और; इस दर्शन में
हमें अधिक माथा पच्ची न करनी पड़ी।
सामने के एक पर कोठे से दक्ष के
मन्दिर को पार कर ज्यों ही आगे
उतरे तो ऐसा जान पड़ा मानों नील
आकाश तारों सहित हमारे सामने
चित्त पड़ा है। रेती-पत्थर का विस्तृ-
त वह मैदान ऐसा दीखा "जैसे आ-
काश की गंगा ही बोझ के मारे धम्म
से नीचे आ पड़ी हो। उस के अन-
गिनित तारे चूर २ होकर बिखर गये
हों। रेती पत्थर के इस धरती के आ-
काश में रुपहली गंगा, प्रात: काल
के बने कालीन पर २ बादलों की
तरह उमड़ी घुमड़ी चली जा रही थी।
वे नन्दीश्वर वृषभ युगल कानों की
कौड़ियों को 'आकाश' हवा का ठिका-
ना कर के यहां अपना रास्ता सीधा-

साथ जाकर खड़े होगये। हमारे भारती ने
बड़े २ उपचार किये, साम दाम भेद दण्ड
विरुद्ध सभी करते, अपने उनके ताये-चाचे के
बहुत सी पीढ़ियों के रिश्ते भी बताये, फिर हनु-
मान चालीसा पढ़ कर इनके वालों को प्यार
स्नेह भी उनकी सेवा में पूजा के लिये भेंट
किया, पर वे नन्दीश्वर महाराज तो वहाँ
एक शिला भगवान की तरह स्थापित होगये थे
कि टस से मस न हिये, आखिर उस भारती
को युद्ध-प्रेरणा हुई उसने उन देव वृषभ के
कानों पर से शब्द का पुल्ला उठा कर
मलना शुरू और उनको तो भगवती गंगा की
तरफ नीचे में ले चला उन नन्दीश्वरों ने
उस अमृत के प्रवाह में पहले मुंह नीचा किये
कुछ मिनिट गुजारे मानों भगवती गंगा को
मत्था-टुक्का प्रणाम किया, और फिर भग-
वती के उस करुणामृत का पानी करने
अलसाई सी आदत का पान करने लगे। और
सारथी इशारा ऐसा किये कि वे कुलांच मार
कर अचल धल, मचल कर धल धार में
कूद पड़े — धाम के मारे स्नान कर होने
के लिये। हमारी मन्दिरों की टोली तो
किलकारी मार कर कूद फांद मचाने लगी
इतने में क्या देखते हैं कि हम सी ही पिली २
धूल जिसे कि हम सुनते हैं ऋषियों की
भांति करते हैं, तो पड़े बांगड़ के कुछ
बड़े ब्रह्मचारी आये और यह है इधर देखते
ही "कौपीनवन्तः खलु भाग्यवन्तः" के
कौपीन धारी होकर वहीं "भगवा, भगवा"

उन्होंने अपनी प्रसिद्ध 'मण्डूक स्तुति' के साथ दस बीस हाथ भी किनारे पर का ही पानी जो मुंह में रखा तो चिल्ला उठा (परम श्रवण नाथ की हवेली के आंवले पानी में घोल दिये हैं। अपनी प्रतिभा जैसा इसकी पत्नी या आंवले लोने पर पानी पीने का मीठा जायका आता है न, मच्छी जैसा ही इस पानी का है।" हमने कहा, "अच्छा बड़े मछली की प्रतिभा लाओ।" उसने तब भी हमने अविश्वास करते २ झिझकते से डरते अपनी २ चालाकी से पानी पिया तो सचमुच आंवलों पर पिये जल का सा मीठा जायका पाया। अब क्या था। लगे हम अगस्त्य की तरह गंगा सिन्धु को पीने। पीते २ पेट की मशक भी भर आई - नसें उठ आईं। तब जाकर यह बाल अगस्त्याभिनय समाप्त हुआ। खैर, गंगा की जान तो बची। इधर से ध्यान हटा तो देखा एक कोई नईचिंग जैसे यंत्र के आविष्कर्ता की तरह वे हमें पानी में पड़ी किसी चीज़ की तरफ इशारा करते हुए कह रहे हैं। 'वह देखो बादाम और नन्हे २।' हम अपनी आंख की हर बीन उठ लगाने पर कुछ न पाते। 'कहां है यूं ही।' "चल झूठ।" कह २ कर उसे खिजाते। कि वह पास से खी पी २ कर उसके लड्डू खिलाता। लीजिये हरद्वारजी देखिये पानी में पड़ी वह कुछ सफेद काली सी वस्तु पत्थर की चमकती टिकियाओं को दिखाने लगा। जो पानी में हैं सु पांती लगाए थीं। जैसे मानो गंगा का इस्तं पीने आती उसकी छोटी बछड़ियाँ कुलांच भर भर खेलती कूदती इधर से ही उभरती अपनी छोटी २ - खुरों को दिखा छोड़ गई हों। हम सब ये देखकर -

बड़े प्रसन्न हुए। और
ला ला कर इन पत्थर की
टिकियाओं की कोष जमा करने
लगे। अफ्रीका के सोने के
खानों के व्यापारी भी
सोना इकट्ठा करते इतना
प्रसन्न न होते होंगे। जितने
हम सब इन बढ़िया टिकियाओं
को चुनने में अपने को
भूला बैठे थे। हमारे इस
व्यापार के भोलेपन पर
काकाजी के नन्दी खड़े खड़े
महादेवजी हंसते २ लोट
पोट होने लगे। एक तो पेट
में नहीं देकर इतना हंसा
कि नन्दीश्वर के पीठ के कद्दू
को पकड़कर भी वे कालू
सा होकर पानी में आ गड़ा
वैदिक धर्म का कर्मफल
का सिद्धान्त अमर रहे कि
उसे हम पर हंसने का
तत्काल फल मिला। और मैं
इतने में उधर से आँख लगा
कर गंगा का उत्थान पतन
देखने में मस्त हुआ। धीरे २
नयन आभार जब गंगा की
धार को धार को लहरा
देती थी। तब देखते ही बनता
था। मैं खड़े २ इस दृश्य
के लिये उपमायें ढूंढने लगा
जैसे कभी गुरुकुल के व्याकरण
छोड़ निराले पंथ के पुजारी
कवि भूलनाथ जी के कूर्प
देने के लिये 'कुपन्थ स्वर
घोषित. कर्म काण्ड पोषित'
की उपमा देते हुए अपने कुम्हार
होने का परिचय दिया था। ऐसा
ही कुछ हास्यास्पद -
प्रयास मैं भी करने लगा

मस्त सा होकर मैं ने भी-

कर चरचराने लगा," है, जैसे गाय की सफ़ेद सफ़ेद पीठ अचानक मेघरूपी खाकर हिल जाती है, वैसे ही तो यह गंगारूपी गाय कंपकपा रही है," और नीचे साफ़ पानी में आसमान का जो अक्स उतरा बार बार काँप जाता था। उसे देख मैंने कहा "अरे दीदू जैसे कण्डील बनाने के नीचे कागज़ों से बना गुब्बारा नहीं पाते खड़ खड़ लहरा जाता है। अब इन उपमाओं के गुड़-गुरगी को आप चाहें कोई बोली-ग्वाला कहें या पतंग गुब्बारा बनाने वाला जोलाहा या कोई ख्वाज़ा-साहेब समझें। आप जैसा भी

चाहें नाम करण संस्कार का जरए रचा करें। हाँ, एक बात तो भूले ही जा रहा था, गंगा की कंपकपी पर मुझे एक और अपनी उसी वक्त प्रत्यक्ष हुआ था। कुछ किये, उसी समये मेरे पीठ पीछे आकर एक साथी भाई ने एक कम का सीधा हिस्सा मेरे कन्धे पर से ले जाते मेरी आँखों पर इस तरह से रखा कि मैं एकदम परेशान के मारे कंपकपा गया। वैसे ही जैसे घर में बहुत सोते कभी २ अपनी प्यारी बहिन के पीछे से आकर अचानक आँख बन्द कर दिये जाने पर आनन्द में कंपकपा जाता था। कुछ दीखा कि गंगा भी इसी तरह की

अनारोप

उलझन में उलझे थे, वे —
कांचनी श्रेणी में प्रवेश कर-
सोऽहं निद्रा विशुद्धात्मा उल्लोद-
लिखी लिख:। प्रकाश्याप्रकाशश्च
लोकालोक इवाचल: ये श्लोक
अभी कुछ ही दिन पूर्व पढ़ने की
गलती कर आए थे। पहाड़ के एक
तरफ रोशनी धूप, दूसरी तरफ-
घना मायावी शाम छाया को-
देख, वे कहने लगे कालिदास-
सरीखे कविकुलगुरु थे। आर्यों
की विद्वत्ता में कौन मुकाबला कर
सकता है? देखो, पर्वत के लिए
"प्रकाश्याप्रकाशश्च लोकालोक
इवाचल:" की कैसी सार्थक पंक्ति
लिखी है। हो-न-हो कविकुल-
गुरु कालीश्वर कालीदास ने यह
श्लोक इसी पर्वत के लिए इसी
जगह- इसी जगह पर बैठकर लिखा
होगा। निश्चय से, कालिदास की
जन्मभूमि, काव्यभूमि यही —
लोकालोक, वाला लगने का
पवित्र प्रदेश है। बंगाली पंडित-
गण भी "आपादपद्म प्रणता:
कलमा इव ते रघुम्। फलैः संवर्ध-
यामासु: उत्खातप्रतिरोपिता:" का-
दास आत लोग कालिदास को -
बंगाली सिद्ध किया चाहते हैं।
उन मूर्खों से पूछो कि क्या बंगाल
में ही धान होते हैं? सारे-
हिन्दुस्तान, सारे बर्मा, सारे चीन,
सारे जापान, सारे योरोप, सभी
तो धान वाले हैं। यदि इस
श्लोक के 'कलमा:' की आवाज
की आहट के मुताबिक ही फैसला
करना है, तब आफत होगी। तब
तो बेचारे कालिदास को एक
हनुमान की छलांग मारकर
चीन में या जापान में जाकर
ही बसना पड़ेगा। भारत से तो
उन्हें देश निर्वासन ही मिलेगा"
और यहीं के एक दूसरे नवीन
कालिदास के भक्त पर बैठ
जाते, उन्हें टांग से पकड़े —
कभी रहते 2 कश्मीर की घाटि-
यों में खींचे लिये जा रहे हैं।
इन भले मानसों से पूछो, कि
क्या कैसर ने कालिदास के
सिर पर लगाने की धुन में
उनका प्राण पखेरू ही उड़ा
देना है। अरे! इसी पर्वत पर
"बैठकर उन्हें, एस. के. बेल-

'महतावेद' का रेल-निर्माण का साइन बोर्ड पढ़ा। उससे दूर दो टीन के छप्पर मकान, (जिन्हें तब टीन शेड कहकर पुकारते थे) ऐसे लगते थे जैसे किसी महाबलशाली के विशाल बाहु। वर्षा धूप, आंधी-ओलों, भालू के डैं किसी की भी कुछ परवाह न करते यह सजी महतावेद, मानो इन्हीं बलवान भुजाओं के पराक्रम पर और तपोवन की अहर्निश रक्षा करता, अविराम पहरा बजाता था। इस सजी को प्रणाम कर हम मेहता जी के पीछे-पीछे, गुरु-महाविद्यालय के पास, "अथर्वलपेलद् मेदं सोमपानाम्" वाली सामान्य कुटिया सी के पास आये, जो पुराने, जोड़े-से हैं जैसे कहते हैं कि श्री पं. सूर्यदेव जी शास्त्री शिरोमणि की झोंपड़ी थी। उसे छूते आयाम शाला के भवन को लाँघते, हम लोग गंगा किनारे बसी एक पुरानी टीन पुरी की ओर निकल आये। इस टीन पुरी का नाम मैं यदि "द्वारिका पुरी" दे दूँ तो भूगोल विशारद श्रीमान् रेत काशीराम जी अवश्य क्षमा करेंगे, अपने १० जरासंधी हमलों के साथ न टूट पड़ें तो भगवान्, मास्टर काशीराम जी का नाम आ ही गया है तो प्रसंग वश स्तुति-व्याख्यान (By the way) उनकी भी सेवा-शुश्रूषा में कुछ भाव देने ही चाहियें, उनकी स्मृतियों में बहुत सी बातें आज ऐसी भूल गई हैं जैसे एक को बिल्ली दूध मलाई चाट गई हो। हाँ, दो बातें ज़रूर याद हैं जो भुलाये भी नहीं भूलतीं, जैसे कि स्वामी दयानन्द जी को जहर दिए जाने का सेहरा और दक्षिणा-दान! मास्टर जी ने सारी ही की कॉन्सपिरेसी (conspiracy) की हुई थी, ऐसा भाव "जनप्रवाद" था। कॉन्सपिरेसी इसलिये, —

गुरुकुल समाचार

गुरुकुल में मौसम बदल रहा है। दिन में कुछ २ गर्मी तथा रात में सर्दी होती है। आकाश में प्रायः बादल छाये रहते हैं। कभी २ आंधी भी आ जाती है। इस आंधी के कारण कुल का आमवन उजड़ सा रहा है। नहर भरी हुई है परन्तु उसमें तैरना अभी प्रारम्भ नहीं हुआ; किश्ती का आनन्द ब्रह्मचारी उठा रहे हैं।

चिकित्सालय रोगियों से प्रायः खाली है। महाविद्यालय के दो ब्रह्मचारी बीमार हैं जो कि अब स्वास्थ्य लाभ कर रहे हैं। विद्यालय विभाग के भी बहुत थोड़े ब्रह्मचारी बीमार हैं। शेष सब ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य उत्तम है। श्री चिरञ्जीलालजी भण्डारी कुछ समय से बीमार थे अब वे भी स्वास्थ्य लाभ कर रहे हैं।

[illegible]

गुरुकुल महाविद्यालय में वाग्वर्धिनी, संस्कृतोत्साहिनी, आयुर्वेद परिषत्, कालिज यूनियन तथा वाग्विकासिनी इत्यादि सभायें कुल में विद्यमान हैं। परीक्षाओं के कारण कुछ समय से इनके साधारण अधिवेशन नहीं हुवे। वार्षिकोत्सव के अवसर पर वाग्वर्धिनी सभा की ओर से 'अन्तर्महाविद्यालय वाद विवाद सम्मेलन' की आयोजना की गई है जिसमें भिन्न २ विश्व विद्यालयों के प्रतिनिधि भाग लेंगे। इस के साथ ही एक 'कविता - सम्मेलन' की आयोजना की गई है। इसके साथ संस्कृतोत्साहिनी की ओर से भी संस्कृत में वाद विवाद होगा।

गुरुकुल की वार्षिक परीक्षायें समाप्त हो चुकी हैं। स्नातक परीक्षा का परिणाम शीघ्र ही प्रकाशित होने वाला है। अन्य श्रेणियों का परिणाम भी शीघ्र ही निकालने का प्रयत्न किया जा रहा है।

इस वर्ष ब्र. देवकीर्ति जी क्रीड़ामन्त्री हैं आपने खेल में विशेष उत्साह दिखाया है आशा है इस वर्ष क्रीड़ा में विशेष

उन्नति होगी।

परीक्षाओं की समाप्ति पर गुरुकुल के ११.१२.१३ श्रेणियों के इतिहास के विद्यार्थी श्री प्रो० सत्यकेतु जी विद्यालंकार के साथ कलकत्ता की ओर गये थे। यद्यपि समय कम था फिर भी उसका पूर्ण लाभ उठाया गया है। मार्ग में लखनऊ, कानपुर, इलाहबाद, बनारस, सारनाथ, गया इत्यादि ऐतिहासिक-स्थानों का अवलोकन करते हुआ यह दल कलकत्ता पहुंचा वहां भी अनेक ऐतिहासिक स्थानों को देख कर ९ अप्रैल को प्रातः काल यह दल वापिस कुल में आगया है। इसके अतिरिक्त इस अवसर का लाभ उठा कर ब्रह्मचारी हृषीकेश इत्यादि भ्रमण करने जाते हैं।

गुरुकुल का वार्षिकोत्सव बहुत समीप है। गत वर्षों की अपेक्षा इस वर्ष उत्सव में अधिक रौनक होने की आशा की जाती है। क्योंकि उधर हरिद्वार में इन्हीं दिनों अर्धकुम्भी महोत्सव मनाया जा रहा है। श्री हृदयनाथ जी

उपजगत

कुंवरजी आजकल हरिद्वार में पधारे हुवे हैं। आपको गुरुकुल जन्मोत्सव पर निमन्त्रित किया गया है आशा है आप कुल में उपस्थित होंगे। इसके अतिरिक्त महात्मा मालवीय जी, महाराज पटियाला तथा महाराज रिहि श्री कुम्भी के अवसर पर हरिद्वार पधारने वाले हैं। आपको भी कुल में पधारने उपस्थित होने के लिये निमन्त्रित किया जायगा आशा है ये तथा अन्य महानुभाव उत्सव में उपस्थित होंगे। इस अवसर पर कई विशेष सम्मेलनों का भी प्रबन्ध किया गया है आशा है उत्सव सफलता पूर्वक मनाया जायगा।

7. **What kind of people should join your profession?**

   Should it be kept open for all ? or

   Should it be kept reserved for some specific persons?

   What should be their recruitment procedure?

8. **What kind of guidance should be given to the young persons who may aspire to join the job life of your line and make it a successful career?**

   Should they join it for a while as a stop gap arrangement or adopt it as a life-long career - Please illustrate.

9. **What kind of people should not be allowed in your profession?**

10. **In your opinion what is the future of this profession?**

11. **Last question please:**

    Sir/Madam, as an experienced professional worker, what is your counseling to me how I as a counselor should give counseling to my students in the school to help them in their successful career development in life?

THANK YOU VERY MUCH AND WISH YOU ALL THE BEST

TEST PUBLISHERS AND DISTRIBUTORS

The names and addresses of the leading Indian publishers and distributors of psychological tests have been given below Catalogues of current tests can be obtained from these publishers on request Each catalogue lists all the tests published and sold by them, including some foreign tests

1 National psychological Corporation, Bhargava Bhavan, 4/230, Kacheri Ghat, College, Agra – 282004. (U P.)
2 Pry – Com Services B -4. 80/2, Safdarjung Enclave, New Delhi – 110029
3 Manasayan, S– 524, School Block, Shakarpur, Main Vikas Marg – II, New Delhi – 110092
4 Agra Psychological Research Cell, Belanganj, Tiwari Kothi, Post Box 4553, Agra – 282004. (U P.)
5 Indian Psychological Corporation, Shanti Sadan Rai, Bhiharilal Road, Lucknow – 226007 (U.P)
6. Rupa Psychological Centre, B – 19/60 B. Deoriabir Bhelupura. Post Box No. 27, Varanasi – 221001 (U.P)
7 Vaman D. Purohit & Sons, 830, Bhavani Peth, Poona -2 (Maharastra)
8 Arohi Psychological Kendra, 7 Dutta & Chadda Enclave, Opposite G S. Commerce, South Civil Line, Jabalpur – 482001 (M P.) Tel.0671-324759
9. Ankur Psychological Agency, B/M -213, Kendra Nagar, Agra – 282010 (U.P)
10. Anand Agencies, 1433 (A) Shukrawar, Poona – 411002 (Maharastra)
11. Educational Guidance Service, Post Box 4553, New Delhi -110016.
12. Jnana Prabodhuni's, Institute of Psychology, Jnana Probodhuni Bhavan, 510, Sadasiv Peth, Pune -410030 (Maharastra)
13 Atma Ram & Sons, Kashmiri Gate, Delhi -110006
14 Bharat Prakashan, 44, Kalyan Bhavan, Tilak Road, Ahmedabad -1 (Gujarat)

REGIONAL INSTITUTE OF EDUCATION: BHUBANESWAR

Examination: Post – Graduate Diploma in Guidance and Counselling

Subject : ______________________________

Paper: __________ Date of Examination: ___________ Full Mark: ______

Roll Number	Marks Obtained		Total Marks Obtained
001.			
002.			
003.			
004.			
005.			
006.			
007.			
008.			
009.			
010.			
011.			
012.			
013.			
014.			
015.			
016.			
017.			
018.			
019.			
020.			
021.			
022.			
023.			
024.			
025.			

Full Signature of the Examiner(s) with Date

No F 4807 Date 9 6 04

A Committee has been constituted of the following members to conduct Practical Examination of Post Graduate Diploma in Guidance and Counselling Course as per the following schedule

1 Principal Chairman
2 Dean of Instruction Member
3 Head DE Member
4 External Examiner of the Concerned Paper Member
5 Internal Examiner of the concerned Paper Member
6 Coordinator PGDGC Programme Member

Venue Staff Common room

Time 9 A M

Paper	Date	External Examiner	Internal Examiner
VII	17 6 2004	Dr Bharati Mohapatra	Dr J.S Padhi
VIII	18 6 2004	Dr S P Anand	Dr B N Panda
IX	21 6 2004	Dr Sarbesar Samal	Dr S C Panda
X	22 6 2004	Dr U N Dash	Dr M C Samal
XI	23 6 2004	Dr A S Dash	Dr P Sahu
XII	24 6 2004	Dr S T V G Acharuyulu	Dr H K Senapati

The Committee Members are requested to make it convenient to conduct the above Practical Examination as per the programme

Principal

REGIONAL INSTITUTE OF EDUCATION : BHUBANESWAR

NOTIFICATION

No. 6775

PROVISIONAL

Date 5 08 2004

The following candidates are declared to have passed the post Graduate Diploma Course in Guidance and Counselling Examination, 2004 held in the month of May/June, 2004

Roll No	Name of the Candidate	Result	Grade
001	Abeera Sanyal	Passed	A-
002	Banishree Priyadarshini	Passed	B
003	Banashree Sethy	Passed	B
004	Bidisha Paul	Passed	B
005	Binapani Padhy	Passed	B
006	Binodini Das	Passed	B
007	Durba Chakraborty	Passed	B
008	Hemanta Pradhan	Passed	B
009	Kumkum Mishra	Passed	A-
010	Lija Pattanaik	Passed	B
011	Madhuchhanda Tripathy	Passed with Distinction	A-
012	Nandita Medhi	Passed	A-
013	Niharika Panda	Passed	A-
014	Rajashree Patnaik	Passed	B
015	Sanjay Khamari	Passed	B
016	Sasmita Swain	Passed	A-
017	Saswati Jena	Passed	A-
018	Somnath Ram	Passed	B
019	Soma Saha	Passed	B
020	Susanta Kumar Nayak	Passed	B
021	Susanta Kumar Pattanaik	Passed	B
022	Tanuja Mohanty	Passed	B
023	Tapaswini Bhanja	Passed	A-

PRINCIPAL

Copy to

1. Notice Board (Institute/Hostel)
2. P.A to Principal for kind information of the Principal
3. Dean of Instruction
4. Head Dept of Education
5. Head, Dept of Educational Psychology and Foundation of Education, NCERT, Sri Aurobindo Marg New Delhi – 110016
6. Head of the Dept. of Extn Edn
7. I/C Academic Section/ Academic Section
8. Coordinator, PGDGC Programmed
9. Office Copy

REGIONAL INSTITUTE OF EDUCATION . BHUBANESWAR

NOTIFICATION

No 6775

Date 5 08 2004

PROVISIONAL

The following candidates are declared to have passed the post Graduate Diploma Course in Guidance and Counselling Examination, 2004 held in the month of May/June, 2004

Roll No	Name of the Candidate	Result	Grade	Marks Obtained	Rank
001	Abeera Sanyal	Passed	A¯	1302	5
002	Banishree Priyadarshini	Passed	B	1254	9
003	Banashree Sethy	Passed	B	1084	23
004	Bidisha Paul	Passed	B	1165	17
005	Binapani Padhy	Passed	B	1165	18
006	Binodini Das	Passed	B	1178	15
007	Durba Chakraborty	Passed	B	1227	11
008	Hemanta Pradhan	Passed	B	1168	16
009	Kumkum Mishra	Passed	A¯	1310	4
010	Lija Pattanaik	Passed	B	1247	10
011	Madhuchhanda Tripathy	Passed with Distinction	A¯	1358	1
012	Nandita Medhi	Passed	A¯	1317	3
013	Niharika Panda	Passed	A¯	1281	8
014	Rajashree Patnaik	Passed	B	1161	20
015	Sanjay Khamari	Passed	B	1181	13
016	Sasmita Swain	Passed	A¯	1284	7
017	Saswati Jena	Passed	A¯	1341	2
018	Somnath Ram	Passed	B	1133	22
019	Soma Saha	Passed	B	1180	14
020	Susanta Kumar Nayak	Passed	B	1162	19
021	Susanta Kumar Pattanaik	Passed	B	1196	12
022	Tanuja Mohanty	Passed	B	1145	21
023	Tapaswini Bhanja	Passed	A¯	1289	6

PRINCIPAL

Copy to

10 Notice Board (Institute/Hostel)
11 P A to Principal for kind information of the Principal
12 Dean of Instruction
13 Head Dept of Education
14 Head, Dept of Educational Psychology and Foundation of Education, NCERT, Sri Aurobindo Marg, New Delhi – 110016
15 Head of the Dept of Extn Edn
16 I/C Academic Section/ Academic Section
17 Coordinator, PGDGC Programmed
18 Office Copy